दमण से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

Asli Azadi Dainik @AsliAzadiDainik asliazadidainikofficial

असली आज़ादी

■ वर्षः 21, अंकः 317 ■ दमण, सोमवार 07, सितंबर 2026 ■ पृष्ठः 8 ■ मूल्यः 2 रु ■ RNI NO-DDHIN/2005/16215 ■ संपादक- विजय जगदीशचंद्र

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने गोवा की राजधानी पणजी में नारकोटिक्स नियंत्रण पर संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया

देश में आर्थिक अपराध, आतंकवाद, नार्कोटिक्स और गैंगवार में लिप्त विदेश भागे भगोड़ों को भारत की अदालतों में लाया गया: गृह मंत्री शाह

■ देश में अपराध करके विदेश भाग निकले भगोड़ों के खिलाफ चलाया जा रहा अभियान, 2019 से जुलाई 2026 तक 36 देशों से 274 भगोड़ों का प्रत्यर्पण किया गया है:गृह मंत्री अमित शाह ■ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हम 2029 तक नशामुक्त भारत का संकल्प साकार करेंगे:गृह मंत्री ■ नशा-मुक्त भारत का रोडमैप चार स्तंभों पर आधारित- इंटेलिजेंस एवं ऑपरेशन आधारित एन्फोर्समेंट, प्रीकर्सर और सिंथेटिक ड्रग्स नियंत्रण, डिमांड एवं हार्म रिडक्शन और क्षमता निर्माण एवं समन्वय ■ चतुष्कोणीय रणनीति अपना कर हम Death Triange और Death Crescent के रास्ते देश में ड्रग्स की तस्करी पर लगाम लगाने के लिए आवश्यक कदम उठा रहे ■ मोदी सरकार ने नशे के खिलाफ लड़ाई को राष्ट्रीय सुरक्षा की प्राथमिकता बनाया ■ शिक्षा, युवा एवं खेल मंत्रालय तथा शिक्षण संस्थान, शिक्षा संस्थानों को ड्रग-फ्री बनाने का संकल्प ले रहे हैं ■ एनसीसी, एनएसएस और My Bharat के माध्यम से लाखों नशामुक्ति मित्र तैयार किए जाएंगे ■ मोदी सरकार के Bottom-to-Top और Top-to-Bottom अप्रोच से जाँच की नई अवधारणा अपनाई गई, वित्तीय जाँच और PIT-NDPS पर विशेष जोर ■ वर्ष 2004-14 तक रू40 हजार करोड़ के 26 लाख किलोग्राम ड्रग्स जब्त हुए, जबकि 2014-2026 तक रू1 लाख 89 हजार करोड़ के 1 करोड़ 19 लाख किलोग्राम से अधिक ड्रग्स की जब्ती हुई ■ नशामुक्त भारत अभियान के तहत 25 करोड़ नागरिकों से संपर्क कर शपथ दिलाई गई, उपचार और पुनर्वास के तहत 5 लाख 70 हजार नागरिकों को नशामुक्त किया गया ■ सामाजिक न्याय, स्वास्थ्य विभाग और जेल प्रशासन मिलकर नशामुक्ति केंद्रों की संख्या तीन गुना बढ़ाकर 1,751 करने जा रहे हैं

पीआईबी नई दिल्ली, 6 सितंबर। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने आज गोवा की राजधानी पणजी में नारकोटिक्स नियंत्रण पर एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया। इस अवसर पर गोवा के मुख्यमंत्री श्री प्रमोद सावंत भी उपस्थित थे।

संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से भारत सरकार ने देश की आंतरिक सुरक्षा को सुदृढ़ करने के लिए ढेर सारे कदम उठाए हैं। उन्होंने कहा कि जब मोदी जी प्रधानमंत्री बने, तब देश के सामने तीन विकराल समस्याएं थीं, जिसमें जम्मू-कश्मीर में बढ़ता आतंकवाद, नक्सलवाद और पूर्वोत्तर में अनेक हथियारबंद संगठनों द्वारा पैदा की जा रही अशांति शामिल थी। इसके अलावा, आंतरिक सुरक्षा के मोर्चे पर देश कई बम धमाकों से भी काफी परेशान था। महिलाओं की सुरक्षा को लेकर बड़े-बड़े आंदोलन हो रहे थे। ठीक उसी दौर में मोदी जी ने देश के प्रधानमंत्री के रूप में कार्यभार संभाला। वर्ष 2019 से अब तक उनके नेतृत्व में पी मुड़कर देखें तो स्थिति काफी बदली है। जम्मू-कश्मीर में धारा 370 हटने के बाद अलगाववाद की भावना में काफी कमी आई है। आतंकवाद के आंकड़े धीरे-धीरे सिकुड़ते हुए शून्य की ओर बढ़ते दिख रहे हैं और जम्मू-कश्मीर विकास के पथ पर आगे बढ़ चुका है। जम्मू-कश्मीर और देश के बाकी हिस्सों के बीच जो मानसिक दूरी थी, उसे पाटने के भी सफल प्रयास हुए हैं। पांच दशक पुरानी नक्सलवाद की समस्या आज लगभग अतीत बन चुकी है। रेड कॉरिडोर की कल्पना करने वाले अधिकतर लोग आज हथियार डालकर सरेंडर कर चुके हैं और मुख्यधारा में शामिल हो रहे हैं। इसी तरह पूर्वोत्तर में भी लगभग 11,000 युवाओं ने हथियार डाले हैं। भारत सरकार ने उनसे 14 से अधिक समझौते किए हैं और आज पूर्वोत्तर भी विकास के रास्ते पर आगे बढ़ रहा है। वर्ष 2019 के बाद अपराध करके भाग निकले भगोड़ों के खिलाफ भी अभियान चलाया गया है। 2019 से जुलाई 2026 तक 36 देशों से 274 भगोड़ों का प्रत्यर्पण किया गया है। इनमें आर्थिक अपराध, आतंकवाद, नार्कोटिक्स और गैंगवार जैसे गंभीर अपराधों में लिप्त लोग शामिल हैं। इन सभी को भारत की अदालतों के सामने लाया गया है। पिछले तीन वर्षों में 401 रेड कॉर्नर नोटिस जारी किए गए। अकेले 2026 में जुलाई तक 182 रेड कॉर्नर नोटिस जारी करने की पूरी प्रक्रिया सफलतापूर्वक पूरी की गई। इसके लिए 'भारतपोल के रूप में एक नई व्यवस्था बनाई गई है। 14 से अधिक केंद्रीय एजेंसियाँ और सभी राज्यों की पुलिस भारतपोल से जुड़ी हुई हैं। हर राज्य के भगोड़ों के प्रत्यर्पण के लिए भारतपोल के माध्यम से एक सुव्यवस्थित तंत्र तैयार किया गया है। वर्ष 2019 से 2026 तक भगोड़ों की लगभग 17,874 करोड़ रुपये की संपत्ति सील या जब्त की जा चुकी है। नए आपराधिक कानूनों और न्याय संहिताओं ने भगोड़ों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई का मार्ग भी आसान बनाया है।

गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि साइबर अपराधों के लिए भी एक व्यवस्थित तंत्र तैयार किया गया है, जिसकी निगरानी प्रधानमंत्री मोदी जी स्वयं कर रहे हैं। आज 1930 हेल्पलाइन साइबर अपराधों से बचाव का प्रभावी माध्यम बन चुकी है। तीनों नए आपराधिक कानूनों को गृह मंत्रालय के माध्यम से राज्यों के सहयोग से पुलिस स्टेशन स्तर तक लागू करने में सफलता मिली है। उन्होंने कहा कि वह गोवा के मुख्यमंत्री और गोवा पुलिस को धन्यवाद करते हैं कि उन्होंने इतने कम समय में नई न्याय संहिता और तीन आपराधिक कानूनों को लागू कर राज्य में दोषसिद्धि दर को 53.2 प्रतिशत तक पहुँचा दिया है। इसका अर्थ है कि दर्ज होने वाली एफआईआर में सजा दिलाने की दर में लगभग 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि नार्कोटिक्स एक ऐसा अपराध है जो हमारी आने वाली पीढ़ियों को नष्ट कर सकता है। उन्होंने कहा कि नार्कोटिक्स से अर्जित कमाई का उपयोग आतंकवाद के लिए भी होता है। नारको-टेरर का मॉड्यूल दुनिया के कई देशों में सक्रिय है और पूरी दुनिया आज इस समस्या से जूझ रही है। उन्होंने कहा कि 2019 से हमने इस पर नकेल कसने की ठोस व्यवस्था की है। इसके लिए हमने व्यवस्थाएँ बदली हैं, नेटवर्क पकड़े हैं, वित्तीय श्रृंखला तोड़ी है और व्यसन के शिकार लोगों को नशे से मुक्त करने के लिए उनका हैंडहोल्डिंग भी किया है। श्री शाह ने कहा कि 2014 से पहले यह लड़ाई टुकड़ों-टुकड़ों में लड़ी जाती थी और छोटी जब्तियाँ कर एवं छोटे आरोपियों को पकड़कर संतोष कर लिया जाता था। लेकिन 2019 से मोदी सरकार ने इस विषय को राष्ट्रीय सुरक्षा की प्राथमिकता बनाया। उन्होंने कहा कि नशे के खिलाफ लड़ाई फाइलों और अलग-अलग एजेंसियों की कार्रवाई से निकलकर अब राष्ट्रीय स्तर पर समन्वित और सतत अभियान बन गई है।

गृह मंत्री ने कहा कि 2019 में चार-स्तरीय एनकॉर्ड तंत्र बनाया गया। सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में समर्पित एंटी-नार्कोटिक्स टास्क फोर्स के गठन का मॉडल भेजा गया तथा संयुक्त समन्वय समिति गठित की गई। केंद्रीय एजेंसियों, राज्य सरकारों और उनके विभागों के समन्वय से बड़े नेटवर्क, अंतर-राज्यीय व अंतरराष्ट्रीय लिंक तथा परिचालन संबंधी खामियों को भरने की वैज्ञानिक पद्धति अपनाई गई। नशाग्रस्त युवाओं के पुनर्वास के लिए 1933 मानस हेल्पलाइन शुरू की गई। नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) के कैडर का पुनर्गठन किया गया। NIDAAN पोर्टल के माध्यम से नारको अपराधियों का राष्ट्रीय डेटाबेस बनाया गया। CCTNS डेटा और इंटीग्रेटेड डेटा फ्यूजन से देशभर के हॉटस्पॉट, कार्यशैली और जब्ती का डेटा-आधारित मानचित्र तैयार किया गया। Bottom-to-Top और Top-to-Bottom दोनों तरह के अप्रोच से जाँच की नई अवधारणा अपनाई गई। उन्होंने कहा कि अब ड्रग्स की छोटी-सी पुड़िया भी पकड़ी जाती है तो यह देखा जाता है कि वह देश में कहाँ से आई। इसी तरह, अगर सीमा पर बड़ा जखीरा पकड़ा जाता है तो यह पता लगाया जाता है कि वह पुड़िया बनकर युवाओं तक कैसे पहुँचने वाला था। इस तरह पूरे नेटवर्क की रिवर्स जाँच शुरू की गई।

श्री अमित शाह ने कहा कि वित्तीय जाँच और PIT-NDPS पर विशेष जोर दिया गया तथा उच्च स्तरीय समर्पित टास्क फोर्स बनाई गई। डार्क नेट, एन्क्रिप्टेड संचार, क्रिप्टो लेन-देन और डेड ड्रॉप डिलीवरी के विरुद्ध प्रौद्योगिकी आधारित जाँच शुरू की गई। ANTF में समर्पित डार्क नेट-क्रिप्टो सेल बनाने का काम शुरू हुआ। प्रीकर्सर और सिंथेटिक ड्रग्स के लिए अंतर-मंत्रालयी व्यवस्था भी बनाई गई। उन्होंने कहा कि इन प्रयासों के अच्छे परिणाम सामने आए हैं। श्री शाह ने कहा कि 2004 से 2014 तक विपक्षी पार्टी के शासन में 26 लाख किलोग्राम ड्रग्स जब्त हुए थे, जिनका मूल्य लगभग 40 हजार करोड़ रुपये था। वहीं, 2014 से 2026 तक मोदी जी के नेतृत्व में यह जब्ती बढ़कर 1 करोड़ 19 लाख किलोग्राम से अधिक हो गई है, जिसका मूल्य लगभग 1 लाख 89 हजार करोड़ रुपये है। उन्होंने कहा कि 2004 से 2014 तक 3 लाख 36 हजार किलोग्राम ड्रग्स नष्ट किए गए थे, जबकि 2014-26 में 48 लाख 68 हजार किलोग्राम ड्रग्स नष्ट किए गए हैं।

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि एनकॉर्ड की 10 शीर्ष बैठकें, 7 कार्यपालक बैठकें, 277 राज्य स्तरीय बैठकें और 16,798 जिला स्तरीय बैठकें हुई हैं। अंतरराष्ट्रीय सहयोग के लिए 46 देशों के साथ समझौते किए गए हैं। नशा मुक्त भारत अभियान के तहत 25 करोड़ नागरिकों से संपर्क कर शपथ दिलाई गई है। उपचार और पुनर्वास के तहत 5 लाख 70 हजार नागरिकों को नशामुक्त बनाने का काम हुआ है। गोवा में भी इसी अवधि में कार्रवाई लगभग तीन गुना बढ़ी है।

श्री अमित शाह ने कहा कि जुलाई 2026 से जुलाई 2029 तक का तीन वर्षीय रोडमैप तैयार किया गया है। इसमें सभी लक्ष्यों को समयबद्ध तरीके से पूरा करने का निर्णय किया गया है। उन्होंने कहा कि नशे के खिलाफ लड़ाई को हम देश की सबसे बड़ी राष्ट्रीय लड़ाइयों में से एक के रूप में आगे बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का लक्ष्य है कि 2047 में नशामुक्त युवा शक्ति विकसित भारत का आधार बने। इस मिशन को सफल बनाने के लिए गृह मंत्रालय और सभी राज्य सरकारें एक साथ काम कर रही हैं। उन्होंने कहा कि 2026 से 2029 तक मिशन मोड घोषित किया गया है। समय-सीमाएँ तय की गई हैं, अलग-अलग मंत्रालयों को उत्तरदायी बनाया गया है, मापने योग्य परिणाम तय किए गए हैं तथा तिमाही समीक्षा और परिणाम आधारित जवाबदेही सुनिश्चित की जाएगी। उन्होंने कहा कि यह रोडमैप चार स्तंभों पर आधारित है। पहला-इंटेलिजेंस एवं ऑपरेशन आधारित एन्फोर्समेंट, दूसरा-प्रीकर्सर और सिंथेटिक ड्रग्स नियंत्रण, तीसरा - डिमांड एवं हार्म रिडक्शन और चौथा - क्षमता निर्माण एवं समन्वय। उन्होंने कहा कि यह सभी स्तंभ मिलकर ड्रग्स किंगपिन के डोजियर तैयार करेंगे, बैकवर्ड-फॉरवर्ड लिंकेज पर समन्वय करेंगे और हर व्यावसायिक मात्रा वाले मामले की वित्तीय जाँच कर नकेल कसेंगे। उन्होंने कहा कि बीएसएफ, सीआईएसएफ, भारतीय तटरक्षक दल, सीमा शुल्क और डीआरआई भूमि सीमा, बंदरगाह, एयरपोर्ट और कार्गो पर जोखिम-आधारित प्रोफाइलिंग तथा स्कैनर लगाकर अधिक पैनी निगरानी करेंगे। गृह मंत्री ने कहा कि सीबीआई, विदेश मंत्रालय और इंटरपोल भगोड़ों को वापस लाएंगे। प्रवर्तन निदेशालय, वित्तीय आसूचना इकाई और बैंकिंग तंत्र धन श्रृंखला पकड़ेंगे।

श्री अमित शाह ने कहा कि एनसीसी, एनएसएस और My Bharat के माध्यम से लाखों नशामुक्ति मित्र तैयार किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि शिक्षा, युवा एवं खेल मंत्रालय तथा शिक्षण संस्थान शिक्षा संस्थानों को ड्रग-फ्री बनाने का संकल्प ले रहे हैं। सामाजिक न्याय, स्वास्थ्य विभाग और जेल प्रशासन मिलकर नशामुक्ति केंद्रों की संख्या तीन गुना बढ़ाकर 1,751 करने जा रहे हैं। लगभग 10,000 स्वयंसेवक इस अभियान में सेवा देंगे। क्षमता निर्माण के लिए मार्च 2027 तक प्रत्येक राज्य में पूर्ण सुसज्जित एंटी-नार्कोटिक्स टास्क फोर्स बनाने के लिए 7 प्रतिशत केंद्रीय सहायता दी जाएगी। फॉरेंसिक रिपोर्ट 30 दिन में आने की व्यवस्था गृह मंत्रालय करेगा। इन चार स्तंभों में 25 घटक और 200 से अधिक एक्शन पॉइंट्स समयबद्ध तरीके से तय किए गए हैं।

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि भारत में विदेशियो का स्वागत है, लेकिन ड्रग्स के साथ नहीं। उन्होंने कहा कि चतुष्कोणीय रणनीति (Quadranguar Approach) अपना कर Death Triange और Death Crescent के रास्ते देश में ड्रग्स की तस्करी पर लगाम लगाने के लिए आवश्यक कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने कहा कि देश से जिस तरह नक्सलवाद खत्म हुआ है, वैसे ही संकल्प के साथ ड्रग्स की समस्या भी खत्म की जाएगी।

मुख्यमंत्री विजय ने पुलिस के कल्याण, आधुनिकीकरण पर दिया जोर

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री सी. जोसेफ विजय ने रविवार को पुलिस दिवस के अवसर पर पुलिस बल को शुभकामनाएं देते हुए उनके कल्याण, कार्यभार में कमी और आधुनिकीकरण के प्रति अपनी सरकार की प्रतिबद्धता जताई। मुख्यमंत्री ने समाज में शांति और कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस बल के निस्वार्थ सेवाभाव, साहस और त्याग की सराहना की। उन्होंने कहा कि पुलिसकर्मी न केवल अपराध रोकते हैं, बल्कि प्रतिकूल परिस्थितियों और प्राकृतिक आपदाओं में भी लोगों की जान-माल की रक्षा करते हैं। विजय ने घोषणा की कि उनकी सरकार पुलिसकर्मियों का कार्यभार कम करने, उन्हें आधुनिक प्रौद्योगिकी से लैस करने और उनके तथा उनके परिवारों के लिए कल्याणकारी योजनाएं सुनिश्चित करने को सर्वोच्च प्राथमिकता देगी। उन्होंने एक सुरक्षित और शांतिपूर्ण तमिलनाडु के निर्माण के लिए जनता से पुलिस के साथ विश्वास और सद्भाव से काम करने का भी आह्वान किया।

दिल्ली में लाठी-डंडों से पीट-पीटकर युवक की हत्या, पुलिस जांच में जुटी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्वी दिल्ली इलाके में रविवार सुबह 5 बजे एक शख्स की लाठियों से पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। मृतक व्यक्ति की पहचान नहीं हो सकी है। ये मामला ईस्ट दिल्ली के मयूर विहार फेज 3 का है। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंचीं और शव को बरामद किया। मौके पर फॉरेंसिक स्पेशलिस्ट की टीम को भी बुलाया गया जो सबूत जुटा रही है। दिल्ली पुलिस ने बताया कि आगे की जांच की जा रही है। पुलिस सीसीटवी फुटेज भी बरामद किया है और अब उसे खंगाल रही है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक घटना के चश्मदीद सिक्योरिटी गार्ड ने बताया कि दो लोग मिलकर एक शख्स को मार रहे थे। उन्होंने कहा कि मैंने सुबह 4 बजे कुछ लोगों को देखा था। वह लोग मुझे भी जान से मारने की धमकी भी दे रहे थे, जिसके बाद मैं वहां से साइड हो गया और फोन किया। गार्ड ने बताया कि उन्होंने फोन करके पुलिस को इस मामले की जानकारी दी थी। सीसीटीवी फुटेज में दो लोगों को साफतौर पर एक शख्स को डंडों से पीटते देखा जा सकता है। पुलिस इन फुटेज के जरिए आरोपियों की तलाश कर रही है।

कांग्रेस प्रत्याशी का विरोध, विधायक को दिखाए काले झंडे, कार पर चढ़े लोग

जयपुर (एजेंसी)। नगर निकाय चुनाव की वोटिंग की तारीख जैसे-जैसे नजदीक आ रही है, वैसे-वैसे जयपुर में टिकट वितरण को लेकर सियासी घमासान तेज हो गया है। अब आमेर विधानसभा क्षेत्र के वार्ड नंबर-149 में कांग्रेस प्रत्याशी अंजलि ब्रह्मभट्ट के विरोध ने नया विवाद खड़ा कर दिया है। आमेर के हांडीपुरा इलाके में अंजलि ब्रह्मभट्ट के समर्थन में पहुंचे आमेर विधायक प्रशांत सहदेव शर्मा को भी भारी विरोध का सामना करना पड़ा। लोग अंजलि ब्रह्मभट्ट को कांग्रेस का टिकट दिए जाने से नाराज हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक विधायक प्रशांत सहदेव शर्मा और कांग्रेस प्रत्याशी की गाड़ी इलाके में पहुंचते ही बड़ी संख्या में लोग जमा हो गए। प्रदर्शनकारियों ने काले झंडे दिखाए और नारेबाजी की। विरोध इतना बढ़ गया कि कुछ लोग गाड़ी के पास पहुंच गए और वाहन को रोकने की कोशिश करने लगे। मौके पर मौजूद समर्थकों और स्थानीय लोगों के बीच काफी देर तक तनाव की स्थिति बनी रही। बताया जा रहा है कि लोगों की मुख्य नाराजगी वार्ड नंबर-149 से निवर्तमान पार्षद अंजलि ब्रह्मभट्ट को कांग्रेस प्रत्याशी बनाए जाने को लेकर है। लोग टिकट वितरण के फैसले का विरोध कर रहे थे और इसी नाराजगी का सामना विधायक प्रशांत सहदेव शर्मा को भी करना पड़ा।

मायावती का आरोप : राजनीतिक दल जेन-जी आंदोलन को कर रहे हाइजैक

-युवाओं के भविष्य पर जताया संदेह

लखनऊ (एजेंसी)। बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) प्रमुख और पूर्व सीएम मायावती ने जेन-जी युवाओं और बेरोजगारों के आंदोलनों को लेकर अपनी गहरी चिंता जाहिर की है। उन्होंने आरोप लगाया कि विभिन्न राजनीतिक दल इन प्रदर्शनों को हाइजैक कर रहे हैं, जिससे युवाओं और छात्रों के बीच गंभीर संदेह पैदा हो रहा है। मायावती ने पोस्ट में कहा कि इसतरह के कई उदाहरण सामने आए हैं, जिससे यह साबित होता है कि युवाओं, छात्रों और बेरोजगारों से जुड़े जेन-जी आंदोलन अब स्वतंत्र न रहकर धीरे-धीरे राजनीतिक हो गए हैं। उन्होंने विशेष रूप से जंतर-मंतर आंदोलन का जिक्र किया, जहां युवाओं और छात्रों को बड़े सपने दिखाए गए थे, लेकिन अब वे राजनीतिक दलों द्वारा आंदोलनों पर कथित कब्जे के कारण गंभीर संदेह का सामना कर रहे हैं। हालांकि, मायावती ने स्पष्ट किया कि बीएसपी हमेशा जेन-जी और जेन-अल्फा की जायज मांगों के प्रति सहानुभूति रखती है और उनकी चिंताओं को गंभीरता से लेती है। उन्होंने सभी बीएसपी राज्य इकाइयों को निर्देश दिया है कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में संबंधित अधिकारियों से मिलकर युवाओं की समस्याओं के शांतिपूर्ण समाधान में मदद करे। इसके साथ ही, उन्होंने बीएसपी कार्यकर्ताओं को अनुशासन का पालन करते हुए धरने, प्रदर्शन या आंदोलनों में शामिल न होने की सलाह दी।

अरुणाचल में पहली बार भारत-चीन कोर कमांडर स्तर की बैठक

मौजूदा मुद्दों पर दोनों पक्षों में हुई बातचीत

नई दिल्ली, एजेंसी।
भारत और चीन की सेनाओं ने रविवार को अरुणाचल प्रदेश में पहली बार कोर कमांडर स्तर की महत्वपूर्ण बैठक की। यह वार्ता वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर वाचा-दमाई बॉर्डर मीटिंग पॉइंट के भारतीय क्षेत्र में स्थित वाचा पर हुई। बैठक का मुख्य उद्देश्य अरुणाचल प्रदेश से जुड़े सीमा क्षेत्र में दोनों सेनाओं के बीच मौजूदा मुद्दों पर चर्चा करना और उनके समाधान के रास्ते निकलना था।

बात दें कि अरुणाचल प्रदेश में कोर कमांडर स्तर की पहली बातचीत रणनीतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है। अरुणाचल का सीमावर्ती इलाका दोनों देशों के लिए अहम है और पहले इसतरह की बैठकें मुख्य रूप से लद्दाख सेक्टर तक सीमित रही हैं। भारतीय पक्ष का नेतृत्व तीन कोर कमांडरों ने किया, जिसमें तेजपुर स्थित 4 कोर और रंगापहार स्थित 3 कोर के प्रमुख शामिल थे, जो अरुणाचल प्रदेश में एलएसी की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार हैं। भारत-चीन एलएसी पर पांच बॉर्डर पर्सनल मीटिंग (बीपीएम) पॉइंट हैं, जिसमें से दो अरुणाचल प्रदेश में हैं, वाचा इन्हीं दो बीपीएम पॉइंट में से एक है।

यह वार्ता तब हुई है जब भारत और चीन के बीच सीमा संबंधी मुद्दों को लेकर सैन्य और कूटनीतिक स्तर पर संवाद जारी है। दोनों देशों की एलएसी को लेकर अपनी-अपनी अलग राय है, इस कारण अक्सर जमीनी स्तर पर समस्याएं पैदा होती हैं। सूत्रों के अनुसार, भारतीय सेना ने उन इलाकों में चीनी सैनिकों के रुख से निपटने के लिए बेहद सख्त रवैया अपनाया है, जहां अभी भी मुद्दे अनसुलझे हैं। पूर्व में, लद्दाख सेक्टर में चुशुल-मोल्डो बॉर्डर मीटिंग पॉइंट पर एलएसी से जुड़े मुद्दों को सुलझाने के लिए कॉर्प्स कमांडर-लेवल की बैठकें होती रही हैं, खासकर 2020 की गलवान झड़पों के बाद, जब दोनों पक्षों को भारी नुकसान उठाना पड़ा था।

सैन्य स्तर की यह ताजा बातचीत राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल की हालिया चीन यात्रा के बाद हुई है। एनएसए डोभाल ने बीजिंग में चीनी विदेश मंत्री वांग यी के साथ 'स्पेशल रिप्रेजेंटेटिव्स डायलॉग' के तहत बातचीत की थी, जिसका मुख्य केंद्र सीमा तय करने और सीमा-पार सहयोग पर काम जारी रखना था। इस बीच, उम्मीद है कि चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग 12-13 सितंबर को होने वाले ब्रिक्स (ब्रिक्स) शिखर सम्मेलन के लिए भारत का दौरा कर रहे है। पूर्व चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान (रिटायर्ड) ने भी पूर्वोत्तर में हॉटलाइन बनाने और कॉर्प्स कमांडर-लेवल की बातचीत की संभावनाओं का स्वागत कर 'एक स्वागत योग्य कदम' बताया है।

मुर्शिदाबाद में भूकंप के झटके, बारिश और भूस्खलन से बढ़ी चिंता

मुर्शिदाबाद (एजेंसी)। प्रकृति के कुपित रूप का अनुभव पश्चिम बंगाल का मुर्शिदाबाद जिला इन दिनों कर रहा है। भारी बारिश और भूस्खलन की लगातार घटनाओं के बाद, शनिवार देर रात भूकंप के झटकों ने लोगों की चिंता और बढ़ा दी। यदि प्रकृति की अप्रत्याशित शक्ति को देखना हो, तो नेपाल जैसी जगहों पर आई विनाशकारी आपदाओं को याद किया जा सकता है, और अब मुर्शिदाबाद में भी प्रकृति का रौद्र रूप एक के बाद एक आपदाओं के रूप में सामने आ रहा है। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र (एनसीएस) के अनुसार, पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में शनिवार देर रात 10 बजकर 24 मिनट पर भूकंप के झटके महसूस किए गए। रिक्टर स्केल पर इसकी तीव्रता 3.7 मापी गई, जबकि भूकंप का केंद्र जमीन की सतह से करीब 10 किलोमीटर नीचे था। एनसीएस ने इसका केंद्र मुर्शिदाबाद में ही रिकॉर्ड किया है। हालांकि इन झटकों से किसी प्रकार के जानमाल के नुकसान की तत्काल कोई सूचना नहीं मिली है, लेकिन अचानक आए कंपन से लोगों में दहशत फैल गई और कई लोग अपने घरों से बाहर निकल आए। यह भूकंप ऐसे समय में आया है जब मुर्शिदाबाद जिला पहले से ही प्रकृति के अन्य प्रकोपों से जूझ रहा है। पिछले कुछ दिनों से यहां भारी से बहुत भारी बारिश हो रही है, जिसके कारण कई इलाकों में भूस्खलन की घटनाएं दर्ज की गई हैं। इन भूस्खलनों ने एक बार न्यू फरक्का रेल रूट को भी बाधित कर दिया था, जिसे कड़ी मशक्कत के बाद यातायात के लिए बहाल किया जा सका है। अब उसी मुर्शिदाबाद में भूकंप के झटकों ने लोगों की बेचैनी को और बढ़ा दिया है।

क्या अखिलेश जी, सहारनपुर जाकर मलबे के सामने फातिहा पढ़ेंगे?: राजभर

सहारनपुर,, एजेंसी।
यूपी सरकार में कैबिनेट मंत्री और सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर ने सहारनपुर की कलेक्ट्रेट स्थित मस्जिद मामले में सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव पर निशाना साधते हुए पूछा कि अखिलेश जी, सहारनपुर जाकर अवैध इमारत के मलबे के सामने फातिहा पढ़ेंगे? क्या आप मसूद भाई की बातों का समर्थन करेंगे? यूपी पूछ रहा है, बताइए ना? उन्होंने यह बात मस्जिद ध्वस्तीकरण की कार्रवाई के बाद मिल रही राजनीतिक प्रतिक्रियाओं के जवाब में कही।

बता दें सहारनपुर कलेक्ट्रेट परिसर में मस्जिद को लेकर विवाद था। इस पर नगर मजिस्ट्रेट की कोर्ट में वाद दायर किया गया था, जिसमें मस्जिद अपने पक्ष में सुबूत नहीं दिखा सका, जिस पर इस मस्जिद के ध्वस्तीकरण के साथ ही 6 करोड़ से अधिक की क्षतिपूर्ति का आदेश पारित किया गया। मस्जिद पक्ष नगर मजिस्ट्रेट के फैसले के खिलाफ जिला अदालत में गया, लेकिन अदालत ने सुबूतों को देखते हुए मस्जिद पक्ष की याचिका खारिज कर दी, जिसके बाद शनिवार तड़के प्रशासन ने मस्जिद को गिरा दिया। इस पर स्थानीय सांसद इमरान मसूद समेत अन्य जनप्रतिनिधियों ने भी ऐतराज जताया, लेकिन सबको हाउस अरेस्ट कर लिया गया था। इमरान मसूद ने इस मामले में सुप्रीम कोर्ट जाने की बात कही है। सहारनपुर में मस्जिद ध्वस्त करने के सवाल पर अखिलेश यादव ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जो लोग धार्मिक स्थलों को गिराते हैं और दूसरों की आस्था के साथ खिलवाड़ करते हैं, वे कभी सनातनी नहीं हो सकते। उन्होंने इसे गलत ठहराया।

नेपाल जैसा भारत में भी ग्लेशियल झीलों से विनाश का खतरा: एनडीएमए

नई दिल्ली, एजेंसी।
हाल ही में ग्लेशियर फटने से नेपाल में आई भीषण तबाही के बाद भारत में भी ऐसे ही विनाश की आशंका जताई जा रही है। देश की 40 ग्लेशियल झीलों को संभावित खतरे में बताया है, जिनमें से 7 को अत्यधिक उच्च जोखिम वाली श्रेणी में रखा गया है। एनडीएमए के मुताबिक, नेपाल-तिब्बत सीमा से सटे भारतीय इलाकों में स्थित ये झीलें कभी भी एक बड़े संकट का कारण बन सकती हैं। नेपाल में हाल ही में हुए ग्लेशियर फटने से 1,000 से अधिक लोगों की मौत हुई थी और 4,000 से ज्यादा लापता हो गए थे, जिसने भारत को भी सतर्क कर दिया है। इस भयावह परिदृश्य के मद्देनजर, एनडीएमए ने विशेष रूप से सिक्किम में 40 उच्च-खतरे वाली ग्लेशियल झीलों की पहचान की है, जिनमें से 7 को उच्च जोखिम श्रेणी में वर्गीकृत किया गया है। इन 40 संवेदनशील झीलों में से 16 का वर्गीकरण हो चुका है, जबकि 13 अभी भी वर्गीकृत नहीं हैं।

अधिकारियों ने बताया कि 16 प्राथमिकता वाली संवेदनशील झीलों में से 13 का विस्तृत वैज्ञानिक आकलन किया गया है। इनमें से अधिकांश झीलें लगभग 17,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित हैं। इस संभावित आपदा से बचाव के लिए सिक्किम राज्य ने कई महत्वपूर्ण उपाय प्रस्तावित किए हैं। सिक्किम के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के प्रमुख सचिव संदीप ताबे ने बताया कि हालिया आकलन में झीलों की गहराई, पानी की मात्रा, मोरेन की मजबूती और हिमस्खलन व भूस्खलन से होने वाले खतरों की जांच की गई है। प्रमुख उपायों में शाको चू झील में सोलर-पावर्ड पंपों का उपयोग करके जल स्तर को 20 से 40 मीटर तक कम करना शामिल है, जिससे लगभग 80 लाख घन मीटर पानी निकाला जाएगा। दूसरा प्रस्ताव साउथ-नॉर्थ लोनाक क्लस्टर के लिए है, जहाँ डोलमा संपांग में लगभग 24 किलोमीटर नीचे एक पत्थर-चिनाई वाली रोक संरचना का अध्ययन किया जा रहा है, ताकि संभावित बाढ़ के बल को कम किया जा सके। तीसरा प्रस्ताव गुरुदोंगमार झील परिसर के लिए है, जहाँ अधिकारी मोरेन प्लग पर एक सुरक्षा दीवार बनाने पर विचार कर रहे हैं, ताकि पवित्र झील को नुकसान पहुंचाए बिना पानी के निकलने को नियंत्रित किया जा सके। इसके अलावा, सिक्किम अपने रियल-टाइम निगरानी और पूर्व-चेतावनी सिस्टम का विस्तार भी कर रहा है। शाको चू, केरांग और डोलमा संपांग में स्वचालित निगरानी स्टेशन पहले से ही कार्यरत हैं, और अधिकारी डॉप्लर वेदर रडार लगाने के लिए जगहों की तलाश कर रहे हैं। राज्य में 400 से अधिक ग्लेशियल झीलें हैं, जिनमें से फिलहाल 16 को अत्यधिक संवेदनशील बताया गया है। यह नवीनतम आकलन अक्टूबर 2023 में हुई भीषण ग्लेशियल झील आउटबर्स्ट बाढ़ के बाद आया है।

राज्यसभा न भेजे जाने पर बोलीं स्मृति: पद नहीं, अवसर महत्वपूर्ण

नई दिल्ली, एजेंसी।
पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने भारतीय जनता पार्टी की केंद्रीय टीम में अपनी वापसी के बाद विभिन्न मुद्दों पर अपनी बात रखी है। हाल ही में एक पॉडकास्ट के दौरान, उन्होंने 2024 के लोकसभा चुनाव में अमेठी से मिली हार के बाद राज्यसभा न भेजे जाने को लेकर अपनी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने स्पष्ट किया कि भाजपा के संगठन में पद केवल एक पहचान नहीं, बल्कि एक अवसर होता है। ईरानी ने कहा, अगर राजनीतिक ताकत ही महत्वपूर्ण होती, तो मैं कभी अमेठी नहीं जाती। क्योंकि ऐतिहासिक रूप से अमेठी भाजपा के लिए एक हारने वाली सीट रही है। गौरतलब है कि स्मृति ईरानी 2011 से 2019 तक राज्यसभा सांसद रही थीं। इसी दौरान उन्होंने 2019 के चुनाव में अमेठी में राहुल गांधी के खिलाफ ऐतिहासिक जीत दर्ज की थी, हालांकि 2024 के लोकसभा चुनाव में उन्हें हार का सामना करना पड़ा।

अपनी राजनीतिक यात्रा पर प्रकाश डालते हुए, ईरानी ने भारतीय जनता पार्टी के युवा मोर्चा में अपने शुरुआती दिनों को याद किया। उन्होंने बताया कि वह पहली बार 2003 में युवा मोर्चा महाराष्ट्र में पदाधिकारी बनी थीं, और उनके साथ तत्कालीन उपाध्यक्ष देवेंद्र फडणवीस थे। उन्होंने हंसते हुए कहा कि उस समय उन दोनों ने कभी नहीं सोचा था कि वे आज इस मुकाम पर पहुंचेंगे। ईरानी ने प्रमोद महाजन और गोपीनाथ मुंडे जैसे नेताओं को प्रेरणास्रोत बताया और कहा कि प्रधानमंत्री मोदी द्वारा सार्वजनिक रूप से की गई सराहना उनके लिए एक बड़ी उपलब्धि है। एक समर्पित भाजपा कार्यकर्ता के रूप में अपने शुरुआती दिनों को याद करते हुए, ईरानी ने बताया कि युवा मोर्चा के समय वह अपने साथी कार्यकर्ताओं की मदद के लिए घर से पेट्रोल और पानी के पैसे भी मांगती थीं। इस पर उनके घरवाले कई बार उन्हें टोकते थे। उन्होंने कहा, तब हम कहते थे कि हाँ, ताकि हम अपने साथियों की मदद कर सकें। उन्होंने अपने संगठन मंत्री वी. सतीश जी का भी जिक्र किया, जिन्होंने उन्हें गरीब कार्यकर्ताओं की मदद करने और उन्हें साथ लेकर चलने की सीख दी। ईरानी ने जोर देकर कहा कि ऐसे मजबूत संगठन और पृष्ठभूमि से आने पर पद का महत्व गौण हो जाता है। एक साक्षात्कार के दौरान, स्मृति ईरानी से बंगाल में एक कार्यक्रम के दौरान वायरल हुए वीडियो पर भी सवाल पूछा गया, जिसमें विपक्ष ने आरोप लगाया था कि प्रधानमंत्री मोदी ने उन्हें नजरअंदाज किया था। इस पर ईरानी ने जवाब दिया, हाँ, उस समय मैं और दादा (मिथुन चक्रवर्ती) एक साथ ही बैठे हुए थे। वीडियो में पीएम मोदी की पीठ दिखाई दे रही है। किसे पता है कौन किसको हाथ जोड़ रहा है। उन्होंने बताया कि वह पल बेहद भावुक करने वाला था, और मंच पर मौजूद हर व्यक्ति की अपनी कहानी थी, खासकर बंगाल में कार्यकर्ताओं ने बहुत कुछ झेला है। उन्होंने जोर देकर कहा कि प्रधानमंत्री उन पुराने कार्यकर्ताओं का अभिवादन कर रहे थे, जिन्होंने बंगाल में उनके लिए गालियाँ सुनी हैं। ईरानी के अनुसार, मायने रखती है तो केवल जीत और बंगाल के कार्यकर्ताओं को मिलने वाला न्याय।

सागर में जहरीली शराब से अब तक 12 लोगों की मौत, 35 अस्पताल में भर्ती

-रात में बिगड़ी थी तबीयत, मरने वालों में चार गांवों के लोग शामिल

सागर, एजेंसी।
मध्य प्रदेश के सागर में जहरीली-अवैध शराब पीने से अबतक 12 लोगों की मौत हो चुकी है। करीब 35 लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया। इनमें से कुछ की हालत अब भी गंभीर बनी बताई जा रही है। मौतों का आंकड़ा और भी बढ़ने की आशंका है। डॉक्टरों के मुताबिक अस्पताल लाए गए मरीजों के शरीर नीले पड़ गए थे और उन्हें अकड़न महसूस हो रही थी। घटना के बाद प्रभावित गांवों में स्क्रीनिंग की जा रही है। शराब पीने वाले लोगों को चेकअप के लिए अस्पताल लाया जा रहा है।

घटना की जानकारी मिलते ही कलेक्टर प्रतिभा पाल और पुलिस अधीक्षक अनुराग सुजानिया सहित प्रशासन और पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी बंडा पहुंचे। अधिकारियों ने अस्पताल पहुंचकर स्थिति की जानकारी ली और मामले की जांच शुरू कराई। कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए बंडा में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया है।

पुलिस के मुताबिक मृतकों में गोलू उर्फ चमन लोधी (45), निवासी गूगरा खुर्द, दिग्विजय लोधी (28), निवासी नौराज, करतार सिंह लोधी (30), निवासी नौराज, उजियार सिंह लोधी (56), निवासी गूगरा खुर्द, रोशन लोधी (30), निवासी पाटन थाना विनायका और राजेंद्र लोधी (32), निवासी नौराज-गूगरा शामिल हैं। गोलू उर्फ चमन को पहले से कैंसर की शिकायत होने की जानकारी भी सामने आई है। वहीं हरनाम राय (42), निवासी चौका, उत्तम नत्थू नायक (42), निवासी दलपतपुर, मंगल रजक (40), निवासी गूगरा खुर्द, परम आदिवासी, निवासी हिनौता और धनसिंह आदिवासी (30), निवासी हिनौता को गंभीर हालत में बीएमसी सागर रेफर किया गया है। प्रशासन और पुलिस द्वारा घटना के कारणों की जांच की जा रही है। जहरीली शराब की आशंका को लेकर भी जांच की जा रही है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक कलेक्टर प्रतिभा पाल ने लोगों से अपील की है कि पिछले 24 से 48 घंटे में किसी भी तरह की शराब पी है या जहरीली शराब के लक्षण दिखाई दे रहे हैं तो तुरंत स्क्रीनिंग कराएं। उन्होंने कहा कि लोग स्थानीय डॉक्टरों की टीम से संपर्क कर सकते हैं या सीधे अस्पताल पहुंचकर जांच करा सकते हैं। मौतों के बाद प्रशासन एक्शन में है। क्षेत्र की 6 शराब दुकानों को सील कर सैंपलिंग के निर्देश दिए हैं। वहीं, अवैध शराब कारोबारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई के लिए कहा गया है।

अल नीनो ने बढ़ाई चिंता, इस साल आखिरी महीने में और बढ़ सकता है प्रभाव

-समुद्र के अंदर जमा अतिरिक्त गर्मी अल नीनो को और कर सकती है मजबूत

नई दिल्ली, एजेंसी।
इस साल दुनिया के कई हिस्सों में मौसम अपना रौद्र रूप दिखा रहा है। भीषण गर्मी, हीटवेव, मूसलाधार बारिश, बाढ़ और भूस्खलन जैसी घटनाओं ने जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित किया है। अब मौसम विशेषज्ञों के बीच प्रशांत महासागर में मजबूत हो रहे अल नीनो को लेकर चिंता है। आशंका जताई जा रही है कि साल के आखिरी महीनों में इसका प्रभाव और तेज हो सकता है और फरवरी 2027 तक मौसम के असामान्य हालात बने रह सकते हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक अल नीनो उस स्थिति को कहा जाता है, जब मध्य और पूर्वी प्रशांत महासागर की समुद्री सतह का तापमान सामान्य से अधिक गर्म हो जाता है। इसका प्रभाव दुनिया के अलग-अलग हिस्सों के तापमान, बारिश और मौसमी गतिविधियों पर पड़ता है। इस बार समुद्र के तापमान में हो रही बढ़ोतरी ने वैज्ञानिकों का ध्यान खींचा है। अल नीनो 3.4 सूचकांक से जुड़े आंकड़ों में जुलाई में समुद्र की सतह का तापमान सामान्य से करीब दो डिग्री सेल्सियस ज्यादा बताया। बाद की साप्ताहिक रीडिंग में यह अंतर बढ़कर करीब 2.2 से 2.6 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया।

रिपोर्ट के मुताबिक समुद्र की गहराई में भी असामान्य गर्मी दर्ज की गई है। जुलाई और अगस्त में प्रशांत महासागर के कुछ गहरे हिस्सों में पानी का तापमान सामान्य से आठ डिग्री सेल्सियस से ज्यादा रहा। विशेषज्ञों का मानना है कि समुद्र के अंदर जमा यह अतिरिक्त गर्मी अल नीनो को और मजबूत कर सकती है। इसी वजह से इसके संभावित प्रभाव को बेहद गंभीर माना जा रहा है। विश्व मौसम विज्ञान संगठन की ओर से जारी आकलनों के मुताबिक अल नीनो की स्थिति के फरवरी 2027 तक बने रहने की संभावना है। इसके 2026 के अंत तक मजबूत होने की आशंका जताई गई है।

रिपोर्ट के मुताबिक संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस भी बढ़ते वैश्विक तापमान और चरम मौसम की घटनाओं को लेकर चिंता जता चुके हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि समुद्र के बढ़ते तापमान के साथ दुनिया के कई हिस्सों में गर्मी और अन्य चरम मौसमी घटनाओं का खतरा बढ़ सकता है। भारत के लिए अल नीनो विशेष चिंता का विषय है। मजबूत अल नीनो का असर भारतीय मानसून पर पड़ सकता है, जिससे बारिश कमजोर या अनियमित होने का खतरा रहता है। इसका सीधा असर कृषि, जल संसाधनों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर पड़ सकता है। हालांकि, अल नीनो का हर बार भारत के मानसून पर एक जैसा प्रभाव नहीं पड़ता और अन्य मौसमी कारक भी अहम भूमिका निभाते हैं। सर्दियों को लेकर भी तस्वीर साफ नहीं है। अल नीनो वैश्विक तापमान और

मौसमी पैटर्न को प्रभावित कर सकता है, लेकिन इससे यह निष्कर्ष निकालना जल्दबाजी होगी कि भारत में इस बार सर्दी आएगी ही नहीं। विशेषज्ञों के मुताबिक आने वाले महीनों में समुद्री तापमान, मानसूनी परिस्थितियों और अन्य वायुमंडलीय संकेतकों पर नजर रखना जरूरी होगा।

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने पणजी में मुख्यमंत्री डॉ. प्रमोद सावंत के साथ राज्य से जुड़े मुद्दों पर समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की

गृह मंत्रालय और राज्य सरकार द्वारा उठाए गए सभी कदमों से गोवा देश में कानून-व्यवस्था के मामले में शीर्ष राज्य बने

■ तीन नवीन न्याय संहिताओं को लागू करने और ICJS के प्रभावी कार्यान्वयन के परिणामस्वरूप गोवा में दोषसिद्धि दर पहले के 22% से बढ़कर 53% हो गई है ■ कई मामलों में, अदालतें अब 6 से 8 महीने के भीतर आपराधिक मामलों का फैसला करने में सक्षम हैं ■ गृह मंत्री ने कानून-व्यवस्था और तटीय सुरक्षा बनाए रखने के लिए कई अहम कदम उठाने के लिए गोवा सरकार और राज्य पुलिस के प्रयासों की सराहना की ■ महत्वपूर्ण ट्रेंड्स और पैटर्न, विभिन्न प्रकार के अपराधों के लिंक, अपराधियों की अंतर-राज्यीय आवाजाही और तटीय सुरक्षा की लगातार निगरानी सुनिश्चित करने की आवश्यकता ■विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए छोटे राज्यों को प्रशासनिक मामलों, क्षमता निर्माण और विकास से जुड़े मुद्दों में पूरा सहयोग देने के प्रति मोदी सरकार कटिबद्ध ■ गोवा में देश का एक आदर्श राज्य बनने की पूरी क्षमता है

पीआईबी नई दिल्ली, 6 सितंबर। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने आज गोवा की राजधानी पणजी में राज्य से संबंधित मुद्दों पर मुख्यमंत्री डॉ. प्रमोद सावंत के साथ समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में केन्द्रीय गृह सचिव, आसूचना ब्यूरो के निदेशक और गृह मंत्रालय, गोवा सरकार, भारतीय तटरक्षक बल तथा अन्य संबंधित संगठनों के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए।

बैठक के दौरान, गोवा के मुख्यमंत्री, मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक ने केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह को राज्य में कानून-व्यवस्था से जुड़े अहम मामलों के बारे में जानकारी दी। एजेंडे में तीन नवीन न्याय संहिताओं को लागू करने, NDPS से जुड़े मामलों, तटीय सुरक्षा, भगोड़ों से जुड़े मामलों, आपदा प्रबंधन, पुलिस आधुनिकीकरण, दुश्मन की संपत्तियों के प्रशासन और अवैध प्रवासियों (खासकर अपराधों और नशीले पदार्थों से जुड़े अपराधों में शामिल लोगों) को वापस भेजने और अन्य अहम मुद्दों पर चर्चा शामिल थी।

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने राज्य में कानून-व्यवस्था और तटीय सुरक्षा बनाए रखने के लिए गोवा सरकार और राज्य पुलिस द्वारा की गई कई अहम पहल की सराहना की। उन्होंने कहा कि इन प्रयासों ने गोवा को नशामुक्त बनाने और साइबर अपराधों से सफलतापूर्वक निपटने में योगदान दिया है। श्री शाह ने राज्य सरकार और सभी संबंधित हितधारकों से सुरक्षा से जुड़ी नई चुनौतियों का व्यापक आकलन करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि अहम ट्रेंड्स और पैटर्न, विभिन्न प्रकार के अपराधों के आपसी संबंध, अपराधियों की अंतर-राज्यीय आवाजाही और तटीय सुरक्षा की लगातार निगरानी सुनिश्चित करने की जरूरत है। श्री शाह ने कहा कि MHA और राज्य सरकार द्वारा उठाए गए सभी कदमों से यह सुनिश्चित होना चाहिए कि गोवा देश में कानून-व्यवस्था के मामले में शीर्ष राज्य बने।

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि मोदी सरकार 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य हासिल करने के लिए छोटे राज्यों को सभी प्रशासनिक मामलों, क्षमता निर्माण और विकास से जुड़े मुद्दों में पूरा सहयोग और पेशेवर मदद प्रदान करने के प्रति कटिबद्ध है। केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि गोवा में देश का एक मॉडल राज्य बनने की पूरी क्षमता है और सुरक्षा व विकास के सभी लक्ष्यों को हासिल करके यह खूबसूरत राज्य भारत माता के माथे की बिंदिया बनेगा।

गोवा सरकार के अधिकारियों ने केन्द्रीय गृह मंत्री को बताया कि राज्य में हिंसक अपराधों में कमी देखी जा रही है। हालांकि, साइबर अपराधों, नशीले पदार्थों से जुड़े अपराधों और विदेशियों से जुड़े उल्लंघनों के मामलों में राज्य में सख्त कार्रवाई की जरूरत है। गोवा के पुलिस महानिदेशक ने बैठक में तटीय सुरक्षा, साइबर अपराधों और नशीले पदार्थों के मामलों पर गोवा सरकार द्वारा उठाए जा रहे कदमों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। पुलिस महानिदेशक ने यह भी बताया कि तीन नवीन न्याय संहिताओं को लागू करने और ICJS के प्रभावी कार्यान्वयन के बाद, राज्य में दोषसिद्धि दर 22% से बढ़कर 53% हो गई है। कई मामलों में, अदालतें अब आपराधिक मामलों का फैसला 6 से 8 महीने के भीतर करने में सक्षम हैं।

गोवा के मुख्यमंत्री ने विश्वास दिलाया कि राज्य सरकार, गोवा को हर रूप से एक 'मॉडल राज्य' बनाने के लिए केन्द्रीय गृह मंत्री के मार्गदर्शन में और केंद्र सरकार के साथ मिलकर काम करेगी।

दिल्ली में 40-50 साल पुरानी इमारत गिरी, हादसे के वक्त 50 से ज्यादा लोग अंदर मौजूद थे, मलबे में कई दबे.. 3 की मौत, कई घायल

नई दिल्ली (ईएमएस) । दिल्ली के सत्य निकेतन में रविवार को एक 5 मंजिला बिल्डिंग गिर गई। इसमें 3 स्टूडेंट्स की मौत हो गई। वहीं, 3 गंभीर रूप से घायल हैं। जो इमारत गिरी वो 40-50 साल पुरानी थी। बिल्डिंग में हॉस्टल चलता था। चश्मदीदों के मुताबिक हादसे के वक्त छात्र कमरों में थे और बेसमेंट में खुदाई चल रही थी। 9 का रेस्क्यू कर लिया गया है। बताया जा रहा है कि बिल्डिंग में 20-25 कमरे थे और हर कमरे में 2 स्टूडेंट्स रहते थे। हादसे के वक्त अंदर 50 से ज्यादा लोग मौजूद थे। बिल्डिंग के मालिक का नाम आनंद बंसल है, जो गुरुग्राम में रहता है। पुलिस ने उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, मलबे के बगल में एक और बिल्डिंग गिरने की हालत में है। लेकिन लोगों को वहां से निकाल लिया गया है।

पांच मंजिला इमारत भरभराकर गिरने की घटना ने सिर्फ रेस्क्यू ऑपरेशन ही नहीं, बल्कि राजधानी के छात्र इलाकों में मौजूद पुराने और जर्जर भवनों की सुरक्षा पर भी बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है। जिस इमारत में हादसा हुआ, वह करीब 40-50 साल पुरानी बताई जा रही है और उसमें छात्रों के लिए हॉस्टल संचालित हो रहा था। हादसे के समय इमारत में 50 से ज्यादा लोगों के मौजूद होने का दावा किया गया है। शुरुआती जानकारी के मुताबिक इमारत में 20-25 कमरे थे और प्रत्येक कमरे में करीब दो छात्र रहते थे। हादसे के बाद कई लोग मलबे में फंस गए। अब तक कई लोगों को बाहर निकाला जा चुका है, जबकि घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया है।

एम्स ट्रॉमा सेंटर में 7 घायल भर्ती

दिल्ली के सत्य निकेतन में इमारत गिरने के बाद 7 लोगों को एम्स ट्रॉमा सेंटर और 1 को सफदरजंग अस्पताल ले जाया गया। एम्स ट्रॉमा सेंटर के मुताबिक, वहां लाए गए लोगों में से 2 को मृत घोषित कर दिया गया।

बेसमेंट में हो रही थी खुदाई

हादसे से जुड़ी सबसे अहम बात यह सामने आई है कि इमारत के बेसमेंट में खुदाई का काम चल रहा था। ऐसे में जांच का एक प्रमुख सवाल यह होगा कि क्या बेसमेंट की खुदाई के दौरान भवन की संरचनात्मक सुरक्षा प्रभावित हुई थी। पुरानी इमारत में नीचे की तरफ निर्माण या खुदाई के दौरान

नींव पर पडने वाले असर की जांच बेहद महत्वपूर्ण हो जाती है। हालांकि हादसे की वास्तविक वजह जांच पूरी होने के बाद ही स्पष्ट होगी। पुलिस ने भवन मालिक के खिलाफ मामला दर्ज किया है। अब जांच में भवन की उम्र, निर्माण की स्थिति, इस्तेमाल की अनुमति, हॉस्टल संचालन और बेसमेंट में चल रहे निर्माण की वैधता समेत कई पहलुओं की पड़ताल हो सकती है।

समस्या अकेली नहीं

उपलब्ध आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2022 से 2025 के बीच दिल्ली में भवन गिरने की 1133 घटनाएं सामने आईं। इन घटनाओं में 98 लोगों की मौत हुई। यह आंकड़ा बताता है कि भवन गिरने की घटनाएं राजधानी में अलग-अलग इलाकों में लगातार सामने आती रही हैं। सत्य निकेतन हादसे को इसी बड़े पैटर्न के संदर्भ में देखना जरूरी है। पुराने भवन, अनधिकृत निर्माण, कमजोर रखरखाव, अतिरिक्त निर्माण और निर्माण कार्य के दौरान सुरक्षा मानकों की अनदेखी जैसे कारण कई मामलों में जोखिम बढ़ा सकते हैं। हालांकि हर हादसे की वजह अलग होती है और सत्य निकेतन मामले में अंतिम कारण जांच के बाद ही तय होगा।

पीएम मोदी ने हादसे पर दुख जताया

पीएम मोदी ने हादसे पर दुख जताया। उन्होंने कहा- दिल्ली के सत्य निकेतन में इमारत गिरने की घटना बेहद दुखद है। अपनों को खोने वाले सभी लोगों के प्रति हमारी गहरी संवेदना है। घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना है।

आज पीएम मोदी की मंत्रियों के साथ होगी समीक्षा बैठक

नई दिल्ली,(ईएमएस)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सोमवार शाम को केंद्रीय मंत्रियों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक करने वाले है। जिससे आगामी कैबिनेट फेरबदल की अटकलें तेज हुई हैं। इस उच्चस्तरीय बैठक में मंत्रियों के कामकाज और उनके विभागों द्वारा चलाए जा रहे सामाजिक न्याय व जनकल्याण से जुड़े कार्यों की विस्तृत समीक्षा होगी। प्रधानमंत्री मोदी ने विशेष रूप से विभिन्न मंत्रालयों की योजनाओं के क्रियान्वयन और जनता तक उनके प्रभाव पर जोर दिया। सूत्रों के अनुसार, सोमवार को होने वाली बैठक में केवल उन्हीं राज्यमंत्रियों और स्वतंत्र प्रभार वाले राज्यमंत्रियों को आमंत्रित किया गया है। जिनके विभाग सीधे तौर पर समाज कल्याण से जुड़े हैं। इसमें मुख्य रूप से शिक्षा मंत्रालय,

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय और कृषि मंत्रालय के कामकाज पर विस्तृत चर्चा होगी। यह देखा जाएगा कि निर्धारित केंद्र की योजनाएं जमीन पर कितनी तेजी से उतरी हैं और संबंधित मंत्रियों ने अपनी जिम्मेदारियां कितनी कुशलता से निभाई हैं। बैठक का अहम हिस्सा मंत्रियों की जवाबदेही तय करना भी था। उन सभी मंत्रियों के काम का मूल्यांकन किया गया जिन्हें विशिष्ट जिम्मेदारियां सौंपी गई थीं। हालांकि, अभी यह स्पष्ट नहीं है कि सोमवार की बैठक के तुरंत बाद किसी मंत्री के भविष्य या उनके पद को लेकर कोई बड़ा निर्णय होगा। मोदी सरकार आने वाले दिनों में राज्यमंत्रियों के अन्य समूहों के साथ भी इसी तरह की सिलसिलेवार बैठकें आयोजित करने की योजना बना रही है, ताकि विभिन्न मंत्रालयों के समग्र कामकाज को समझा जा सके। मंत्रियों के प्रदर्शन पर पीएम मोदी की चर्चा को कैबिनेट में होने वाले संभावित बदलावों से सीधे तौर पर जोड़कर देखा जा रहा है। हालांकि, फेरबदल को लेकर अभी तक कोई आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है, लेकिन इन बैठकों को महत्वपूर्ण संकेत माना जा रहा है। मंत्रियों के कामकाज की यह गहन समीक्षा तब हो रही है जब सरकार विभिन्न मंत्रालयों के प्रदर्शन पर लगातार नजर रख रही है। फिलहाल, सभी की निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि बैठक में किन मंत्रियों के कामकाज पर बात हुई और आने वाले दिनों में होने वाली बैठकों का क्या रुख रहता है। इन्हीं चर्चाओं से आगे चलकर कैबिनेट में किसी बड़े बदलाव की तस्वीर साफ हो सकती है।

पांच साल में पांच गुना बढ़ेगी बिजली की मांग, 30 बड़े शहरों पर भारी जल संकट का खतरा

नई दिल्ली (ईएमएस)। देश में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल सेवाओं के विस्तार में डेटा सेंटर तेजी से बढ़ रहे हैं। इसका सबसे बड़ा असर बिजली और पानी की मांग पर पड़ने की आशंका है। विशेषज्ञों के अनुसार अगले पांच वर्षों में डेटा सेंटर क्षेत्र की बिजली मांग कई गुना बढ़ सकती है। एआई आधारित डेटा सेंटर में सर्वर की क्षमता और कूलिंग सिस्टम के कारण सामान्य डेटा सेंटर की तुलना में ऊर्जा खपत काफी अधिक होती है। भारत में 2025 में डेटा सेंटर राष्ट्रीय बिजली खपत का करीब 0.5 प्रतिशत इस्तेमाल कर रहे थे। डेटा सेंटर की दूसरी बड़ी जरूरत पानी है। सर्वरों को ठंडा रखने के लिए बड़ी मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है। भारत के डेटा सेंटर पहले ही सालाना करीब 150 अरब लीटर पानी इस्तेमाल कर रहे हैं।

विशेषज्ञों की चिंता इसलिए बढ़ी है। देश के कई डेटा सेंटर ऐसे शहरों और औद्योगिक क्षेत्रों में विकसित हो रहे हैं। जहां पहले से पानी का दबाव है। हाल ही में ठाणे में प्रस्तावित एक बड़े डेटा सेंटर के लिए प्रतिदिन 1.25 लाख लीटर उपचारित पानी और 422 मेगावाट बिजली की जरूरत सामने आई है।

जल संसाधनों पर दबाव बढ़ने से करीब 30 बड़े शहरों में भविष्य में पेयजल संकट गंभीर हो सकता है। ऐसे में डेटा सेंटर नीति में बिजली के साथ जल उपलब्धता को भी अनिवार्य मानदंड तैयार करने की जरूरत है। जल पुनर्चक्रण, एयर और लिक्विड कूलिंग तथा नवीकरणीय ऊर्जा पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

लंदन जा रही फ्लाइट की बेंगलुरु में इमरजेंसी लैंडिंग

बेंगलुरु(ईएमएस)। लंदन जा रही वर्जिन अटलांटिक के विमान को उड़ान भरने के कुछ ही देर बाद तकनीकी खराबी के चलते बेंगलुरु के केम्पेगौड़ा इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर 'आपात स्थिति में उतरना पड़ा। विमान में 270 पैसेंजर्स सवार थे। एयरपोर्ट के संचालक बेंगलुरु इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड (बीआईएएल) के सूत्रों ने बताया कि विमान ने सुबह करीब 8:20 बजे हवाई अड्डे से उड़ान भरी, लेकिन उड़ान भरने के तुरंत बाद उसमें तकनीकी खराबी आ गई। इसके चलते तुमकुरु के नजदीक प्लेन ने आधे घंटे से अधिक समय तक चक्कर लगाया और फिर एहतियानत बेंगलुरु एयरपोर्ट पर इमरजेंसी लैंडिंग की। विमान में सवार सभी यात्री सुरक्षित हैं।

देश में मॉनसून फिर सक्रिय, मध्यप्रदेश, यूपी समेत कई राज्यों में भारी बारिश का अलर्ट

■ गुजरात, महाराष्ट्र और सौराष्ट्र-कच्छ के कुछ इलाकों में भी छिटपुट बारिश का अनुमान

नई दिल्ली,(ईएमएस)। देश के बड़े हिस्से में मॉनसून एक बार फिर सक्रिय होने वाला है। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने रविवार को कई राज्यों में बारिश का अनुमान जताया है। दिल्ली, मध्य प्रदेश, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब और राजस्थान में कई जगहों पर भारी बारिश हो सकती है। कुछ इलाकों में बहुत भारी बारिश की भी संभावना जताई है। दिल्ली में रविवार को दोपहर से शाम के बीच बादल छाए रह सकते हैं। राजधानी में कुछ जगहों पर मध्यम बारिश हो सकती है। आईएमडी ने दिल्ली के लिए किसी भी तरह की मौसम आधारित चेतावनी जारी नहीं की है। वहीं, दिल्ली से सटे गुरुग्राम, फरीदाबाद, गाजियाबाद और नोएडा में बारिश को लेकर अलर्ट जारी किया है। पिछले दो दिनों में हुई तेज बारिश के कारण दिल्ली-एनसीआर के कई इलाकों में जलभराव की स्थिति देखने को मिली थी। उत्तर-पश्चिम भारत के कई हिस्सों में बारिश और गरज के साथ बौछारों का दौर जारी रह सकता है। उत्तराखंड, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब और उत्तर प्रदेश में कुछ जगहों पर भारी बारिश हो सकती है। मध्य प्रदेश और राजस्थान में भी तेज बारिश हो सकती है। इन दोनों राज्यों में कुछ इलाकों में बहुत भारी बारिश होने का अनुमान है। पूर्वी भारत के कई हिस्से भी बारिश से प्रभावित रहेंगे। पश्चिम बंगाल, सिक्किम, बिहार, झारखंड और ओडिशा में बारिश और गरज-चमक की स्थिति बन सकती है। इन राज्यों के कई इलाकों में भारी बारिश होने की संभावना जताई गई है। पूर्वोत्तर राज्यों में भी मौसम में नमी रहेगी। अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय समेत पूर्वोत्तर के दूसरे हिस्सों में भारी बारिश का अनुमान है। पश्चिमी तट पर कोंकण और गोवा में कई जगहों पर बारिश हो सकती है। गुजरात, महाराष्ट्र और सौराष्ट्र-कच्छ के कुछ इलाकों में भी छिटपुट बारिश का अनुमान है। दक्षिण भारत में भी कई राज्यों में बारिश होने की उम्मीद है। तमिलनाडु, पुडुचेरी और कराईकल में गरज-चमक के साथ बिजली गिरने और तेज हवाएं चलने की स्थिति बन सकती है। केरल और माहे में कुछ जगहों पर भारी बारिश हो सकती है। आईएमडी ने अरब सागर में मछुआरों के लिए भी सावधानी बरतने की सलाह दी है। सोमालिया के तट और उससे लगे दक्षिण-पश्चिमी तथा पश्चिम-मध्य अरब सागर के हिस्सों में सतर्क रहने को कहा गया है। 6 से 9 सितंबर के बीच ओमान के तट और उससे लगे पश्चिम-मध्य और उत्तर-पश्चिम अरब सागर में भी मछुआरों को सावधानी बरतने की सलाह दी है।

CHANGE OF NAME

OLD NAME : ARMINA ADELAIDE ROSARIO E MIRANDA
WIFE OF TIAGO FRANCISCO DE MIRANDA
NEW NAME: ARMINA GERMANA ADELAIDE DO ROZARIO WIFE OF TIAGO FRANCISCO DE MIRANDA
ADDRESS :- HOUSE NO. 5/41, BADRAPOR, MOTI DAMAN, DAMAN- 396220.

बंगाल में भारतीय शिक्षा-दृष्टि को बल देने की अनुकरणीय घोषणा

ललित गर्ग

विद्या भारती की विशेषता केवल यह नहीं है कि वह विद्यालयों की एक बड़ी शृंखला संचालित करती है। उसकी मूल अवधारणा शिक्षा को ज्ञान, संस्कार, चरित्र, राष्ट्रबोध और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ने की है। संस्था स्वयं अपने उद्देश्य में भारतीय मूल्यों और संस्कृति पर आधारित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, राष्ट्रभावना, आत्मनिर्भरता और सामाजिक जिम्मेदारी को प्रमुखता देती है। ग्रामीण, जनजातीय, सीमावर्ती और अपेक्षाकृत वंचित क्षेत्रों में शिक्षा का विस्तार भी उसके घोषित उद्देश्यों का हिस्सा है।

पश्चिम बंगाल में शिक्षा के क्षेत्र में मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी की ओर से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख शैक्षणिक प्रकल्प विद्या भारती के कम से कम एक हजार नए विद्यालय स्थापित करने का लक्ष्य केवल विद्यालयों की संख्या बढ़ाने की घोषणा नहीं है, बल्कि इसे राज्य की शिक्षा-दृष्टि में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के संकेत के रूप में देखा जाना चाहिए। 4 सितंबर 2026 को सामने आई इस घोषणा के अनुसार अगले एक वर्ष में राज्य के प्रत्येक जिले, नगरपालिका और पंचायत तक विद्या भारती के विद्यालयों का विस्तार करने का लक्ष्य रखा गया है। वर्तमान में पश्चिम बंगाल में विद्या भारती से जुड़े 313 विद्यालय संचालित होने की बात कही गई है। मुख्यमंत्री ने विद्या भारती के नेतृत्व को राज्य सचिवालय में शिक्षा विभाग के अधिकारियों के साथ मिलकर इस योजना को आगे बढ़ाने का भी निमंत्रण दिया है। यह घोषणा इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि विद्या भारती आज देश के सबसे बड़े स्वैच्छिक शिक्षा-उपक्रमों में से एक है। विद्या भारती के अपने उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार उसका नेटवर्क देशभर में 12,500 से अधिक विद्यालयों तक फैला हुआ है और इनमें 35 लाख से अधिक विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। उसके विद्यालय पूर्व-प्राथमिक से लेकर उच्चतर माध्यमिक स्तर तक शिक्षा प्रदान करते हैं तथा खेल, संगीत, कला, विज्ञान, संस्कार और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे क्षेत्रों को भी शिक्षा का हिस्सा मानते हैं। हाल के समाचारों में देशभर में 12,000 से अधिक विद्यालयों और लगभग 10,000 बाल संस्कार केंद्रों का उल्लेख भी हुआ है। आंकड़ों में अंतर अलग-अलग वर्षों और संस्थागत गणना-पद्धतियों के कारण हो सकता है, लेकिन इससे विद्या भारती के व्यापक शैक्षिक विस्तार की तस्वीर स्पष्ट होती है।

विद्या भारती की विशेषता केवल यह नहीं है कि वह विद्यालयों की एक बड़ी शृंखला संचालित करती है। उसकी मूल अवधारणा शिक्षा को ज्ञान, संस्कार, चरित्र, राष्ट्रबोध और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ने की है। संस्था स्वयं अपने उद्देश्य में भारतीय मूल्यों और संस्कृति पर आधारित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, राष्ट्रभावना, आत्मनिर्भरता और सामाजिक जिम्मेदारी को प्रमुखता देती है। ग्रामीण, जनजातीय, सीमावर्ती और अपेक्षाकृत वंचित क्षेत्रों में शिक्षा का विस्तार भी उसके घोषित उद्देश्यों का हिस्सा है। यहीं से पश्चिम बंगाल की नई पहल का व्यापक महत्व सामने आता है। बंगाल भारत की सांस्कृतिक चेतना का एक अत्यंत समृद्ध केंद्र रहा है। रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, रवींद्रनाथ ठाकुर, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय और अनेक महापुरुषों ने भारतीय चिंतन, शिक्षा, साहित्य और राष्ट्रचेतना को नई दिशा दी। इसलिए बंगाल की शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान, संस्कृति, मातृभाषा, स्थानीय इतिहास और राष्ट्रीय दायित्व को उचित स्थान देना किसी राजनीतिक आग्रह से अधिक व्यापक सांस्कृतिक आवश्यकता के रूप में देखा जा सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी इसी दिशा में कई महत्वपूर्ण प्रावधान करती है। नीति का उद्देश्य विद्यार्थी में भारतीय होने के प्रति गहरी आत्मगौरव भावना विकसित करने के साथ ज्ञान, कौशल, मूल्यों और जिम्मेदार नागरिकता का विकास करना है। विशेष रूप से उल्लेखनीय यह है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा से जोड़ने की बात करती है। इसमें भारतीय ज्ञान प्रणालियों, जनजातीय ज्ञान, पारंपरिक सीखने की पद्धतियों, योग, दर्शन, साहित्य, कृषि, वास्तुकला, चिकित्सा, खेल और अन्य भारतीय योगदानों को वैज्ञानिक एवं प्रमाणिक ढंग से पाठ्यक्रम में स्थान देने की बात कही गई है। नीति यह भी कहती है कि पाठ्यचर्या भारतीय और स्थानीय संदर्भ, संस्कृति, परंपरा, भाषा, भूगोल तथा ज्ञान-परंपराओं से जुड़ी होनी चाहिए। इस दृष्टि से देखें तो विद्या भारती का शैक्षिक प्रयोग और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनेक लक्ष्य एक-दूसरे के पूरक दिखाई देते हैं। अंतर यह है कि नीति एक राष्ट्रीय नीति-ढांचा उपलब्ध कराती है, जबकि विद्या भारती जैसा सामाजिक संगठन लंबे समय से विद्यालय स्तर पर मूल्याधारित शिक्षा का अपना प्रयोग करता आया है। इसलिए यदि पश्चिम बंगाल सरकार इस विस्तार को गुणवत्तापूर्ण शिक्षक प्रशिक्षण, आधुनिक विज्ञान, तकनीक, डिजिटल शिक्षा, कौशल विकास और संवैधानिक मूल्यों के साथ जोड़ती है तो इसका प्रभाव केवल नए विद्यालय खोलने तक सीमित नहीं रहेगा।

विद्यालय खोलना अपेक्षाकृत आसान है, लेकिन अच्छे शिक्षक, प्रशिक्षित प्रधानाचार्य, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएं, खेल सुविधाएं, डिजिटल संसाधन और गुणवत्तापूर्ण पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराना कहीं अधिक कठिन कार्य है। इसलिए इस पहल की सफलता संख्या से नहीं, शिक्षा की गुणवत्ता से मापी जानी चाहिए। यदि नए विद्यालय केवल भवन बनकर रह गए तो लक्ष्य अधूरा होगा; यदि वे अच्छे शिक्षक और अच्छे नागरिक बनाने के केंद्र बनते हैं, तभी यह पहल ऐतिहासिक सिद्ध होगी। यहीं स्वयंसेवी संगठनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। देश के अनेक सरकारी विद्यालय संसाधनों की कमी, शिक्षक-अभाव, आधारभूत सुविधाओं की कमजोरी, तकनीकी पिछड़ेपन और स्थानीय सहभागिता की कमी जैसी समस्याओं से जूझते रहे हैं। सरकार अकेले प्रत्येक विद्यालय की हर आवश्यकता पूरी करे, यह व्यावहारिक रूप से कठिन है। ऐसे में सामाजिक और स्वयंसेवी संस्थाओं को सरकार के प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि सहयोगी के रूप में देखा जाना चाहिए। विद्या भारती के विस्तार के साथ यह सहयोग एक नया मॉडल विकसित कर सकता है-सरकार आधारभूत संरचना और नियामक सहयोग दे, स्वयंसेवी संगठन शैक्षिक नवाचार, शिक्षक प्रशिक्षण, सामुदायिक भागीदारी और मूल्याधारित कार्यक्रमों में योगदान करें तथा स्थानीय समाज विद्यालय को अपना संस्थान समझकर उसके विकास में सहभागी बने। विद्या भारती के विस्तार के साथ यदि व्यापक शिक्षक प्रशिक्षण अभियान चलाया जाए, जिसमें भारतीय दर्शन के साथ आधुनिक शिक्षाशास्त्र, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल तकनीक, मनोविज्ञान, कौशल शिक्षा और नई मूल्यांकन पद्धतियां शामिल हों, तो यह पूरे देश के लिए अनुकरणीय मॉडल बन सकता है।

मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने मुर्शिदाबाद और दक्षिण 24 परगना जैसे क्षेत्रों में विशेष विस्तार की बात भी कही है और वहां राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों को लेकर चिंता व्यक्त की है। इन राजनीतिक आरोपों से अलग शिक्षा की दृष्टि से मूल प्रश्न यह है कि संवेदनशील और सामाजिक रूप से विविध क्षेत्रों में विद्यालय नागरिकता-बोध, संवैधानिक कर्तव्य, सामाजिक समरसता, वैज्ञानिक सोच और राष्ट्रीय एकता को कितना मजबूत कर सकते हैं। शिक्षा का सर्वोत्तम उत्तर किसी समुदाय के विरुद्ध अविश्वास पैदा करना नहीं, बल्कि हर बच्चे में जिम्मेदार और जागरूक भारतीय नागरिकता का निर्माण करना है। वंदे मातरम्, भारतीय संस्कृति और राष्ट्रभावना जैसे विषयों को लेकर मुख्यमंत्री के वक्तव्य ने बहस को राजनीतिक आयाम जरूर दिया है। लेकिन दीर्घकालीन दृष्टि से आवश्यकता ऐसी शिक्षा की है जिसमें राष्ट्रप्रेम स्वाभाविक संस्कार बने, आदेश या भय का विषय नहीं। पश्चिम बंगाल की यह पहल इसलिए संपूर्ण राष्ट्र के लिए भी एक महत्वपूर्ण सबक या प्रेरणा है कि शिक्षा केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं हो सकती। सरकार, समाज, अभिभावक, शिक्षक, उद्योग, स्वयंसेवी संस्थाएं और पूर्व विद्यार्थी-सभी मिलकर शिक्षा का नया सामाजिक तंत्र बना सकते हैं। यदि विद्या भारती के पास संगठनात्मक अनुभव है, सरकार के पास संसाधन और नीतिगत शक्ति है तथा समाज के पास सहभागिता की क्षमता है, तो इन तीनों का समन्वय शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा परिवर्तन ला सकता है। आज भारत को ऐसी शिक्षा चाहिए जो आधुनिक भी हो और अपनी जड़ों से जुड़ी हुई भी; वैज्ञानिक भी हो और संस्कारवान भी; रोजगारपरक भी हो और चरित्रनिर्माणकारी भी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इसके लिए नीतिगत दिशा दी है। अब आवश्यकता है कि विभिन्न राज्य और सामाजिक संगठन अपने-अपने स्तर पर इसके प्रभावी प्रयोग प्रस्तुत करें। पश्चिम बंगाल में विद्या भारती के एक हजार नए विद्यालयों का लक्ष्य इसी संदर्भ में एक प्रयोगशाला बन सकता है।

शुभेंदु अधिकारी की घोषणा इसलिए बधाई के योग्य है कि इसने शिक्षा को राजनीतिक विमर्श से आगे बढ़ाकर सामाजिक सहभागिता और भारतीय शिक्षा-दृष्टि के विमर्श के केंद्र में ला दिया है। अब असली परीक्षा घोषणा की नहीं, उसके क्रियान्वयन की है। यदि एक वर्ष में विद्यालयों की संख्या बढ़ाने के साथ शिक्षक की गुणवत्ता, पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता, आधुनिक विज्ञान, तकनीकी दक्षता, भारतीय ज्ञान परंपरा, नैतिकता, संवैधानिक चेतना और सामाजिक समरसता को समान महत्व दिया गया, तो बंगाल का यह प्रयोग केवल बंगाल का नहीं रहेगा। यह भारत को यह संदेश दे सकता है कि शिक्षा व्यवस्था को बदलने के लिए केवल नई इमारतें नहीं, नई दृष्टि और समाज की सक्रिय सहभागिता भी आवश्यक है। और शायद यही आज के भारत की सबसे बड़ी शैक्षिक आवश्यकता है-'ज्ञान आधुनिक हो, दृष्टि वैज्ञानिक हो, चरित्र भारतीय हो और शिक्षा का अंतिम लक्ष्य राष्ट्र एवं मानवता का कल्याण हो।'

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अ?निवार्य नहीं है)

संपादकीय

क्या मंशा है ट्रंप की?

ईरान युद्ध के छह माह के दौरान 10 लाख से अधिक भारतीयों को खाड़ी देशों से वापस घर आना पड़ा है। वे अचानक बेरोजगार हो गए हैं। खाड़ी देशों में काम करते हुए भारतीय करीब 51-54 अरब अमरीकी डॉलर अपने घरों को भेजते रहे हैं। यह औसत अब काफी कम हो सकता है। खाड़ी देशों में करीब 1 करोड़ भारतीय विभिन्न क्षेत्रों में, लंबे वक्त से, काम कर रहे हैं। अचानक थोपे गए युद्ध ने बहुत कुछ अस्थिर, अनिश्चित कर दिया है। होर्मुज जलडमरूमध्य लगभग बंद है और उस पर ईरान की आईआरजीसी का पूर्ण नियंत्रण है। राष्ट्रपति ट्रंप सपने देखते रहते हैं, लिहाजा यह बयान भी अटपटा नहीं लगना चाहिए कि उन्होंने कहा है कि होर्मुज का नाम बदल कर ह्यट्रंप स्ट्रेटह्ल कर देना चाहिए। बहरहाल होर्मुज से कच्चे तेल की भारत को आपूर्ति नगण्य है। कतर, कुवैत, बहरीन और संयुक्त अरब अमीरात को भारत जो इंजीनियरिंग उत्पाद निर्यात करता था, वह लगभग ठप हो गया है। बासमती चावल, केला, नारियल और चाय पत्ती आदि का निर्यात भी 50 फीसदी तक गिर गया है। यह आर्थिक नुकसान, अंततः, भारत की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करेगा। अब भारत एलपीजी और एलएनजी का, अमरीका से, सबसे बड़ा आयातक बन गया है। भारत ने कुल 11 लाख टन एलपीजी का आयात किया है, जिसमें अमरीका की हिस्सेदारी करीब 6 लाख टन है। अमरीका से ही एलएनजी का आयात भी 38 फीसदी से अधिक है। कभी कतर हमें 43-45 फीसदी एलएनजी की आपूर्ति करता था। अमरीकी गैस महंगी भी पड़ती है, लेकिन मजबूरी है कि इतने विशाल देश की खपत के लिए पर्याप्त गैस भी अनिवार्य है। अमरीकी पाबंदियों के बावजूद भारत ने जून-जुलाई में रूस से औसतन 26-28 लाख बैरल तेल रोजाना खरीदा है। यह हिस्सेदारी 50-55 फीसदी है। तेल-गैस का कारोबार बढे और वेनेजुएला के तेल पर 'अवैध' कब्जा करने के बावजूद अमरीका पर कर्ज 40 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच गया है। यह चीन, जर्मनी, जापान, ब्रिटेन और भारत की साझा, कुल अर्थव्यवस्थाओं से भी अधिक है। यह कर्ज प्रत्येक अमरीकी पर करीब 1,19,000 डॉलर का है और प्रत्येक घर पर करीब 3 लाख डॉलर का कर्ज है। राष्ट्रपति ट्रंप इसे पिछले 35 साल का कर्ज मानते हैं और अपने कार्यकाल के दौरान कर्ज को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। बहरहाल युद्ध में संहारक प्रहार वाली, इंटरसेप्टर मिसाइलों-पैट्रियट और थाड-की कमी 50-65 फीसदी है। उत्पादन के पुराने स्तर तक लौटने में सालों लगेंगे, लेकिन फिर भी राष्ट्रपति ट्रंप ईरान युद्ध को लंबा खींचना चाहते हैं। या यूं कहें कि वह ऐसे 'चक्रव्यूह' में फंस गए हैं कि युद्ध से बाहर निकलने का रास्ता ही नहीं दिख रहा। अब राष्ट्रपति ट्रंप और इजरायल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू ईरान में तख्तापलट की साजिशों में जुटे हैं।

चिंतन-मनन

निर्णय में बदलाव पर नजर

लोगों के व्यवहार व कार्यों से या तो तुम सहमत होते हो या असहमत। परंतु इतना सदैव याद रखो कि सब कुछ परिवर्तनशील है। इसीलिए किसी भी निर्णय पर अड़े मत रहो वरना तुम्हारी धारणाएं चट्टान की तरह ठोस हो जाती हैं और तुम्हें व औरों को दुःखी करती हैं। यदि निर्णय हवा के झोंकों की तरह हल्के हों तो वे सुगंध फैलाकर आगे बढ़ जाते हैं। वे दुर्गंध भी फैलाकर जा सकते हैं-परंतु उन्हें हमेशा वहीं नहीं रहना है। निर्णय इतने सूक्ष्म होते हैं कि तुम्हें उनके होने का आभास भी नहीं होता। किसी को निर्णायात्मक ठहराना या समझना भी एक निर्णय है। केवल जब तुम सत्ता के साथ होते हो, प्रेम और अनुकम्पा से पूर्ण, केवल तभी तुम निर्णयों से मुक्त हो सकते हो। पर यह संसार फैसलों के बिना आगे नहीं बढ़ सकता। जब तक तुम अच्छे या बुरे का निर्णय नहीं ले लेते, तुम किसी कार्य को नहीं कर पाते। यदि कोई तुमसे दस बार झूठ कहे तो तुम सोचते हो अगली बार भी शायद वह झूठ ही कहेगा। निर्णय स्वतः ही हो जाता है। परंतु इस संभावना को सदा ध्यान में रखो कि व्यक्ति व वस्तु कभी भी बदल सकते हैं और अपने फैसलों पर अड़े मत रहो।

हां, अपनी संगति पर तुम्हें निर्णय करना आवश्यक है। तुम्हारी संगत तुम्हें ऊपर उठा सकती है और नीचे भी खींच सकती है। जो संगत तुम्हें संदेह, निरुत्साह, शिकायत, प्रोध, भ्रम और कामना की तरफ नीचे खींचती हैं, वह कुसंगत है। जो संगति तुम्हें आनंद, उत्साह, सेवा, प्रेम, विश्वास और ज्ञान की तरफ ऊपर खींचती है, वह अच्छी संगत है। जब कोई शिकायत करता है, पहले तुम सुनते हो। फिर उसकी हां में हां मिलाते हो, फिर उसके साथ सहानुभूति दिखाते हो; फिर तुम भी शिकायत करने लगते हो। बस, याद रखो, अपने निर्णयों को पक्का मत होने दो।

राष्ट्रीय पोषण सप्ताह : स्वस्थ भारत की मजबूत नींव

सुनील कुमार महला

हमारे देश में प्रत्येक वर्ष 1 से 7 सितंबर तक राष्ट्रीय पोषण सप्ताह मनाया जाता है। शारीरिक विकास के लिए संतुलित आहार और उचित पोषण हर किसी के लिए बहुत आवश्यक है, फिर चाहे वह कोई बच्चा हो, बुजुर्ग हो या महिलाएं। हमें यह याद रखना चाहिए कि पोषण केवल स्वास्थ्य का ही विषय नहीं, बल्कि देश के भविष्य से जुड़ा राष्ट्रीय दायित्व है। इस दिवस को मनाने के पीछे मुख्य उद्देश्य आमजन को संतुलित आहार, उचित पोषण, कुपोषण की रोकथाम और स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूक करना है। वास्तव में, यह सप्ताह हमें याद दिलाता है कि स्वस्थ और सशक्त राष्ट्र का निर्माण केवल आर्थिक विकास से नहीं, बल्कि स्वस्थ नागरिकों से होता है। कहना गलत नहीं होगा कि पोषण हमारे शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास का आधार है। शरीर को ऊर्जा देने, रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने, बच्चों के विकास तथा कार्यक्षमता बनाए रखने के लिए पर्याप्त और संतुलित पोषण आवश्यक है। विशेष रूप से बच्चों, किशोरियों, गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं के लिए उचित पोषण अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भविष्य की उत्पादकता पर भी दीर्घकालिक प्रभाव छोड़ता है कुपोषण:-

बहरहाल,यहां पाठकों को बताता चलूं कि हमारे देश में बच्चों में कुपोषण की स्थिति अब भी गंभीर चिंता का विषय है।राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5(एनएफएचएस-5) के अनुसार, पांच वर्ष से कम आयु के 35.5 प्रतिशत बच्चे ठिगनेपन से, 19.3 प्रतिशत बच्चे दुबलेपन/वेस्टिंग से और 32.1 प्रतिशत बच्चे कम वजन (अंडरवेट) की समस्या से प्रभावित हैं। इनमें 7.7 प्रतिशत बच्चे गंभीर वेस्टिंग से प्रभावित हैं। यूनिसेफ के 2025 के भारत संबंधी पोषण विवरण में भी लगभग 36 प्रतिशत बच्चों में बौनापन और 19 प्रतिशत में वेस्टिंग यानी कि लंबाई के अनुपात में वजन कम का उल्लेख किया गया है। यूनिसेफ के ये आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि कुपोषण केवल बच्चों के शारीरिक विकास को ही प्रभावित नहीं करता, बल्कि उनकी रोग-प्रतिरोधक क्षमता, सीखने की क्षमता और भविष्य की उत्पादकता पर भी दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकता है।

बच्चों के समुचित विकास में चुनौती है कुपोषण:-

वास्तव में हमारे देश में पोषण और संतुलित आहार की कमी आज भी बच्चों के समुचित विकास में बड़ी चुनौती है। यहां प्रश्न यह उठता है कि आखिर बच्चों को पोषण और संतुलित आहार की कमी के पीछे मुख्य कारण क्या हैं? तो इस प्रश्न का सीधा सा उत्तर यह है कि गरीबी, भोजन में विविधता की कमी, पोषण संबंधी जागरूकता का अभाव और असंतुलित खान-पान के कारण अनेक बच्चे आवश्यक प्रोटीन, विटामिन, खनिज और कैलोरी पर्याप्त मात्रा में नहीं ले पाते और इसका असर बच्चों की शारीरिक वृद्धि, मानसिक विकास और रोग-प्रतिरोधक क्षमता पर पड़ता है। कुपोषण के कारण बच्चों में वेस्टिंग (कम वजन), स्टंटिंग (कम लंबाई) और कम वजन जैसी समस्याएं देखने को मिलती हैं। इसलिए बच्चों के लिए पौष्टिक, विविधतापूर्ण और संतुलित आहार सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है।

हम सभी ने छोटी कक्षाओं में अध्ययन करते हुए यह पढ़ा है कि संतुलित आहार में क्रमशः अनाज, दालें, हरी पत्तेदार सब्जियां, मौसमी फल, दूध एवं दुग्ध उत्पाद, मेवे, बीज और पर्याप्त मात्रा में पानी शामिल होना चाहिए। वास्तव में, हमारे भोजन में विविधता जितनी अधिक होगी, शरीर को आवश्यक पोषक तत्व मिलने की संभावना उतनी ही बेहतर होगी। इसके साथ ही अत्यधिक जंक फूड, नमक, चीनी और तले-भुने खाद्य पदार्थों के सेवन को सीमित करना भी जरूरी है। पाठक जानते हैं कि समय के साथ, पश्चिमी सभ्यता संस्कृति, समय का अभाव, गलत खानपान की आदतों,शहरी संस्कृति के कारण आज हमारे देश में जंक फूड, अधिक नमक, चीनी और तले-भुने खाद्य पदार्थों का चलन तेजी से बढ़ रहा है। वास्तव में सच तो यह है आज स्वाद और सुविधा के कारण बच्चे पौष्टिक भोजन की जगह इन खाद्य पदार्थों को अधिक पसंद करने लगे हैं। इनका अत्यधिक सेवन मोटापा, मधुमेह और हृदय संबंधी समस्याओं का जोखिम बढ़ा सकता है, इसलिए संतुलित आहार में फल, सब्जियां, दालें, अनाज, दूध और प्रोटीनयुक्त खाद्य पदार्थों को प्राथमिकता देनी चाहिए। स्वाद के साथ स्वास्थ्य का संतुलन ही स्वस्थ जीवन की सच्ची कुंजी है।

बदलती जीवनशैली के बीच बढ़ रहे स्वास्थ्य जोखिम:-

हाल फिलहाल, राष्ट्रीय पोषण सप्ताह केवल एक जागरूकता अभियान मात्र ही नहीं है, बल्कि यह कुपोषण के विरुद्ध सामूहिक संकल्प लेने का अवसर है। परिवार, विद्यालय, आंगनबाड़ी केंद्र, स्वास्थ्य संस्थान और समाज मिलकर पोषण संबंधी सही जानकारी को जन-जन तक पहुंचा सकते हैं। बच्चों में शुरू से ही पौष्टिक भोजन की आदत विकसित करना उनके बेहतर भविष्य की नींव तैयार करता है। जैसा कि ऊपर भी इस आलेख में चर्चा कर चुका हूं कि आज जब बदलती जीवनशैली के कारण मोटापा, मधुमेह और अन्य जीवनशैली संबंधी समस्याएं बढ़ रही हैं, तब पोषण का महत्व और भी बढ़ जाता है। सही भोजन, नियमित शारीरिक गतिविधि, पर्याप्त नींद और स्वच्छता-ये सभी स्वस्थ जीवन के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं।

तो आइए, इस राष्ट्रीय पोषण सप्ताह पर हम सभी यह संकल्प लें कि हम स्वयं भी पौष्टिक एवं संतुलित आहार अपनाएंगे और अपने परिवार तथा समाज को भी इसके प्रति जागरूक करेंगे। क्योंकि सही पोषण ही स्वस्थ जीवन की पहचान है और जब हमारे देश के सभी नागरिक स्वस्थ होंगे तो हमारा देश भी निरंतर तरक्की और प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

मासूम बचपन पर मंडराता अपहरण का खतरा

कांतिलाल मांडोत

बच्चों की सुरक्षा के लिए अब कानून से लेकर पुलिस व्यवस्था तक में बड़े बदलाव की जरूरत...

बच्चा जब घर के आंगन में खेलता है तो माता पिता को लगता है कि दुनिया की सारी खुशियां उनके सामने हैं। उसकी हंसी घर को जीवंत बना देती है और उसकी छोटी छोटी जरूरतें परिवार के लिए जीवन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाती हैं। लेकिन यही बच्चा अचानक घर से गायब हो जाए तो उस परिवार की दुनिया जैसे थम जाती है। उसके लौटने की उम्मीद हर पल बनी रहती है और हर गुजरते घंटे के साथ चिंता गहरी होती जाती है। बच्चों के अपहरण की घटनाएं इसलिए केवल अपराध के आंकड़े नहीं हैं बल्कि इनके पीछे हजारों परिवारों की ऐसी पीड़ा छिपी होती है जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है।

देश में बच्चों के बढ़ते अपहरण को लेकर सुप्रीम कोर्ट में दायर जनहित याचिका ने एक बेहद गंभीर विषय को राष्ट्रीय चर्चा के केंद्र में ला दिया है। सवाल केवल यह नहीं है कि कितने बच्चे लापता होते हैं बल्कि बड़ा सवाल यह है कि उनके गायब होने के बाद व्यवस्था कितनी तेजी और संवेदनशीलता के साथ उन्हें खोजने का प्रयास करती है। यदि किसी बच्चे के लापता होने की सूचना मिलने के बाद शुरूआती समय में ही प्रभावी कार्रवाई हो जाए तो उसके सुरक्षित मिलने की संभावना बढ़ सकती है। इसके विपरीत जांच में देरी अपराधियों को अपनी गतिविधियों को छिपाने का अवसर दे सकती है।

बच्चों के अपहरण का स्वरूप भी लगातार गंभीर होता जा रहा है। कई मामलों में यह केवल किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत अपराध तक सीमित नहीं रहता बल्कि इसके पीछे संगठित नेटवर्क की भूमिका सामने आती है। बच्चों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाने वाले गिरोह राज्यों की सीमाओं का फायदा उठाते हैं। ऐसे नेटवर्क स्थानीय स्तर से शुरू होकर दूसरे राज्यों तक फैले हो सकते हैं। इसलिए बच्चों की तलाश और अपराधियों की पहचान के लिए केवल एक थाने या एक जिले की पुलिस पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं हो सकता।

मानव तस्करी इस समस्या का सबसे भयावह पहलू है। मासूम बच्चों को उनके परिवारों से दूर करके अलग अलग प्रकार के शोषण में धकेला जाना समाज के लिए गंभीर चेतावनी है। कुछ बच्चे मजदूरी के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं तो कुछ को भीख मांगने के लिए मजबूर किया जाता है। ऐसे गिरोह बच्चों की मजबूरी को अपने अवैध कारोबार का साधन बना लेते हैं। बच्चों के हाथों में किताब और खिलौने होने चाहिए लेकिन अपराधी उन्हें अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करने लगते हैं। इससे बड़ा सामाजिक अन्याय और क्या हो सकता है।

बच्चों को भीख मांगने के लिए मजबूर करने की घटनाएं भी इसी समस्या की एक कड़ी हैं। सड़क पर किसी बच्चे को भीख मांगते देखकर अक्सर लोग कुछ पैसे देकर आगे बढ़ जाते हैं। लेकिन यह समझना जरूरी है कि उस बच्चे की स्थिति के पीछे कोई संगठित शोषण तो नहीं है। हर बच्चा अपनी इच्छा से सड़क पर नहीं आता। कई बच्चे परिस्थितियों और अपराधी नेटवर्क के कारण ऐसी जिंदगी जीने को मजबूर होते हैं। इसलिए बाल भिक्षावृत्ति के खिलाफ कार्रवाई को केवल सामाजिक कल्याण का विषय नहीं बल्कि संगठित अपराध के खिलाफ अभियान के रूप में भी देखा जाना चाहिए।

बच्चों के अपहरण के मामलों में पुलिस की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। शिकायत मिलने के बाद तत्काल प्राथमिकी दर्ज होना और जांच शुरू होना जरूरी है। बच्चे की तस्वीर और पहचान संबंधी जानकारी जल्द से जल्द संबंधित पुलिस इकाइयों तक पहुंचनी चाहिए। रेलवे स्टेशन बस अड्डों और अन्य परिवहन केंद्रों पर भी सूचना पहुंचाने में देरी नहीं होनी चाहिए। आधुनिक तकनीक ने पुलिस के सामने कई नए साधन उपलब्ध कराए हैं। कैमरों की निगरानी से लेकर डिजिटल रिकॉर्ड और दूसरे तकनीकी माध्यमों का इस्तेमाल बच्चों की तलाश में किया जा सकता है। लेकिन तकनीक तभी प्रभावी होगी जब उसके साथ प्रशिक्षित और संवेदनशील पुलिसकर्मी भी मौजूद हों।

ऐसे मामलों में जांच अधिकारियों की जिम्मेदारी भी सामान्य अपराधों से अलग है। बच्चे की बरामदगी के साथ यह पता लगाना भी जरूरी है कि उसे किसने उठाया और किस उद्देश्य से ले जाया गया। यदि केवल बच्चे को बरामद करके मामला समाप्त मान लिया गया तो उसके पीछे सक्रिय पूरा नेटवर्क बच सकता है। अपराध की जड़ तक पहुंचना जरूरी है ताकि उसी गिरोह के दूसरे बच्चे भी सुरक्षित किए जा सकें।

लंबी कानूनी प्रक्रिया भी इस समस्या को गंभीर बनाती है। बच्चों से जुड़े मामलों में पीड़ित परिवार पहले ही मानसिक और सामाजिक पीड़ा से गुजरता है। यदि मुकदमा वर्षों तक चलता रहे तो न्याय की प्रतीक्षा स्वयं एक नई पीड़ा बन जाती है। इसलिए बाल अपहरण और मानव तस्करी के गंभीर मामलों की सुनवाई के लिए विशेष व्यवस्था पर विचार किया जाना चाहिए। तेज सुनवाई का अर्थ जल्दबाजी में न्याय करना नहीं बल्कि ऐसे मामलों को अनावश्यक देरी से बचाना होना चाहिए।

कठोर कानून की मांग के साथ यह भी जरूरी है कि कानून का प्रभाव जमीन पर दिखाई दे। अपराधियों को सजा का भय तभी होगा जब जांच मजबूत हो और मुकदमे का परिणाम समय पर सामने आए। केवल कानून में कठोर प्रावधान जोड़ देने से समस्या खत्म नहीं होगी। पुलिस की जवाबदेही बढ़ानी होगी। जांच की गुणवत्ता सुधारनी होगी और अलग अलग राज्यों की एजेंसियों के बीच समन्वय को मजबूत करना होगा।

मानव तस्करी के मामलों में जिन राज्यों का नाम अधिक सामने आता है वहां विशेष निगरानी व्यवस्था विकसित करने की जरूरत है। सीमावर्ती क्षेत्रों और ऐसे स्थानों पर विशेष ध्यान देना होगा जहां से बच्चों को दूसरे राज्यों में ले जाना आसान होता है। बस परिवहन और रेलवे नेटवर्क के जरिए बच्चों की आवाजाही पर नजर रखने के लिए संस्थागत व्यवस्था मजबूत होनी चाहिए। इसके साथ ही बाल संरक्षण संस्थाओं और स्थानीय प्रशासन को भी सक्रिय भूमिका निभानी होगी।

परिवारों की जागरूकता भी महत्वपूर्ण है। बच्चों को सुरक्षा के सामान्य नियमों के बारे में समझाना चाहिए। स्कूलों में भी बच्चों को यह बताया जाना चाहिए कि किसी अनजान व्यक्ति के साथ जाना या उसके बहकावे में आना कितना जोखिमपूर्ण हो सकता है। हालांकि पूरी जिम्मेदारी परिवारों पर डालना उचित नहीं होगा। सार्वजनिक व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिसमें बच्चे सुरक्षित माहौल में रह सकें और किसी घटना के बाद राज्य की मशीनरी तुरंत सक्रिय हो।

असली आज़ादी

संक्षिप्त समाचार

सैन्य परिसर के अंदर जोरदार विस्फोट, 10 की मौत, 60 से ज्यादा घायल; आखिर कैसे हुआ इतना बड़ा धमाका

वाशिंगटन, एजेंसी। दक्षिण अमेरिकी देश बोलिविया में शुक्रवार को एक सैन्य परिसर में हुए जोरदार विस्फोट ने भारी तबाही मचा दी। स्थानीय स्वास्थ्य निदेशक रीटा नेब्रास्का के मुताबिक, हादसे में कम से कम 10 लोगों की मौत हो गई, जबकि 60 से ज्यादा लोग घायल हुए। हालांकि, मृतकों की संख्या बढ़कर 15 तक पहुंचने की आशंका जताई गई है। विस्फोट स्थानीय समयानुसार दोपहर करीब 2:30 बजे वियाचा स्थित सैन्य परिसर में हुआ। यह इलाका बोलिविया की राजधानी ला पाज से करीब 30 किलोमीटर दूर है। अधिकारियों के अनुसार, धमाका उस हिस्से में हुआ जहां आतिशबाजी और पायरोटेक्निक सामग्री रखी गई थी। अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि विस्फोट की शुरुआत किस वजह से हुई। अधिकारियों ने बताया कि परिसर में रक्षा मंत्रालय के भंडार में रखी आतिशबाजी मौजूद थी। स्वास्थ्य निदेशक रीटा नेब्रास्का ने बताया कि 62 लोगों के घायल होने की जानकारी सामने आई थी और मृतकों की संख्या 15 तक पहुंच सकती है। घायल लोगों में से 14 को इलाज के लिए ला पाज के अस्पतालों में ले जाया गया। इनमें एक बच्ची भी शामिल थी, जो तीसरी डिग्री तक जल गई। पुलिस के अनुसार, 50 से ज्यादा लोग घायल हुए और विस्फोट की वजह से आसपास के दर्जनों घरों को नुकसान पहुंचा। धमाके की तीव्रता इतनी ज्यादा थी कि कई घरों की खिड़कियां टूट गईं।

अवैध प्रवासियों को डिपोर्ट करेंगे यूरोपीय देश: पांच देशों में होगा समझौता; क्या विदेश में बनेंगे वापसी केंद्र

कोपेनहेगन, एजेंसी। यूरोप में अवैध प्रवासियों और बिना कानूनी अनुमति के रह रहे लोगों पर शिकंजा कसने की तैयारी तेज हो गई है। डेनमार्क की मेजबानी में हुई बैठक में जर्मनी, ऑस्ट्रिया, ग्रीस, डेनमार्क और नीदरलैंड के समूहों ने बड़ा कदम उठाया है। इन पांच देशों ने यूरोपीय संघ से बाहर के किसी देश में रिटर्न हब (प्रवासी वापसी केंद्र) बनाने को लेकर ठोस सहमति जताई है। जर्मनी के गृह मंत्री एलेक्जेंडर डोब्रिंडट ने कोपेनहेगन में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि इन देशों का लक्ष्य इसी साल ऐसे तीसरे देशों के साथ समझौते को अंतिम रूप देना है। हालांकि, अभी उन देशों के नामों का खुलासा नहीं किया गया है जहां ये केंद्र बनाए जाएंगे। यूरोपीय संसद ने जून में नई प्रवासन नीति को मंजूरी दी थी। इस योजना को लेकर मानवाधिकार संगठनों ने चिंता जताई है। काउंसिल ऑफ यूरोप ने इन केंद्रों को मानवाधिकारों के लिए जोखिम भरा बताया है। वहीं, डेनिश रिफ्यूजी काउंसिल की महासचिव शार्लोट स्लेंटे का कहना है कि इससे प्रवासियों के खतरनाक रास्ते नहीं रुकेंगे। डेनमार्क के आव्रजन और एकीकरण मंत्री मोर्टन बोद्स्कोव ने उम्मीद जताई है कि साल 2027 के अंत तक प्रवासियों को भेजने की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी। इस पूरी योजना पर चर्चा के लिए यह समूह सितंबर के अंत में जर्मनी के म्यूनिख में फिर बैठक करेगा।

रूस-यूक्रेन जंग में बढ़ी हलचल: कीव के बाद मॉस्को भी जाएंगे अमेरिकी दूत; क्या निकलेगा शांति का रास्ता

कीव, एजेंसी। अमेरिका के अधिकारी स्टीव विटकॉफ और जरेड कुशनर इस सप्ताहांत मॉस्को जाएंगे। इसके बाद वे कीव जाएंगे। उनका दौरा अगले सप्ताह की शुरुआत तक चल सकता है। अमेरिका के एक अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। वह अधिकारी सार्वजनिक रूप से बोलने के लिए अधिकृत नहीं था। इसलिए उसने नाम न बताने की शर्त पर बात की। अधिकारी ने दोनों जगहों पर जाने के सही समय की जानकारी नहीं दी। यह दोनों अमेरिकी अधिकारियों की कीव की पहली यात्रा होगी। अमेरिका युद्ध खत्म कराने के लिए बातचीत की कोशिश कर रहा है। लेकिन अब तक इन कोशिशों से शांति का रास्ता नहीं निकल पाया है। यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने शुक्रवार को कहा कि वह विटकॉफ और कुशनर के रविवार को कीव पहुंचने की उम्मीद कर रहे हैं। इससे पहले दोनों अधिकारी मॉस्को जाएंगे। जेलेंस्की ने टेलीग्राम पर कहा कि बातचीत के दौरान यूक्रेन हवाई हमले नहीं करेगा। उन्होंने रूस से भी ऐसा ही करने की अपील की। उन्होंने कहा कि इससे बातचीत सुरक्षित तरीके से हो सकेगी। यूक्रेनी राष्ट्रपति ने कहा, अमेरिकी पक्ष की पिछली राजनयिक यात्राओं की तरह हम यह सुनिश्चित करेंगे कि रूसी हवाई क्षेत्र सामान्य रूप से काम करता रहे, ताकि बातचीत के लिए आने वाले अधिकारी सुरक्षित पहुंच सकें। रूस के राष्ट्रपति के प्रवक्ता दिमित्री पेस्कोव ने शुक्रवार को अमेरिकी अधिकारियों के मॉस्को दौरे की खबरों की पुष्टि करने से इनकार कर दिया।

जलविद्युत परियोजना के कर्मी सुरंग में 9 दिन कैसे रहे जिंदा, नेपाल में बचाव अभियान में क्या बदलाव

काठमांडू, एजेंसी। नेपाल में हिमालय की ऊंची पहाड़ियों से आए एक सैलाब का असर बीते नौ दिन से लगातार यहां रहने वालों के लिए एक बुरा सपना बना हुआ है। दरअसल, नेपाल में सबसे ज्यादा तबाही सैलाब को साथ लाने वाली भोटेकोशी और त्रिशूली नदी के आसपास के क्षेत्रों और इन नदियों पर बनी ऊर्जा परियोजनाओं को झेलनी पड़ी। इन्हीं क्षेत्रों में सबसे ज्यादा लोगों की मौत हुई और अधिकतम लापता हुए। खासकर छह हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट्स पर काम करने वाले करीब 900 लोगों की खोजबीन अब तक जारी है। इस बीच शुक्रवार सुबह एक अच्छी खबर आई। राहत-बचाव कार्य में लगी टीमों ने त्रिशूली नदी पर चल रही एक परियोजना में काम कर रहे दो लोगों को नौ दिन बाद मलबे से सुरक्षित बाहर निकाल लिया।

सामने आया है कि जिन दो लोगों को त्रिशूली 3ए प्रोजेक्ट के अंडरग्राउंड केंद्र के ऊपर जमे मलबे से बाहर निकाला गया है, वे दोनों ही नेपाली नागरिक हैं। इन्हें उपचार के लिए काठमांडू ले जाया गया है। दोनों ने ही बताया कि जब बाढ़ का प्रकोप जलविद्युत परियोजना पर पड़ा, तब उनके साथ कई और लोग मलबे में दब गए। हालांकि, बाकी लोगों की खोज अभी जारी है। बाढ़ से सबसे बुरी तरह प्रभावित हुई हाइड्रोपावर परियोजनाओं में काम कर रहे दो लोगों के नौ दिन बाद सही-सलामत निकलने के बाद यह जानना अहम है कि आखिर यह दो लोग इस भीषण बाढ़ की चपेट में आने के बावजूद नौ दिन तक जिंदा कैसे रहे जलविद्युत परियोजनाओं में काम कर रहे लोगों को निकालने के लिए राहत-बचाव कर्मी किस तरह अभियान चला रहे हैं।

फिलहाल यह साफ नहीं है कि जिस त्रिशूली 3ए प्रोजेक्ट में राहत-बचाव कार्य के दौरान दो लोग निकाले गए, वहां और कितने लोग फंसे हो सकते हैं या कितने जिंदा होंगे। हालांकि, जो दो लोग बचे हैं, उनके खुद के बयानों और रेस्क्यू टीम की कोशिशों से चार अहम तथ्य निकलकर सामने आए। सबसे पहले जो बात सामने आई, वह यह कि सुरंग के मलबे में दबे एक व्यक्ति संजय साह बाढ़ के खतरे के बीच 40-45 लोगों को बचाने में सफल हुए थे और इसी दौरान सुरंग में फंस गए।

गोल्डीलॉक्स जोन में फंसकर बची जिंदगी : दोनों कर्मचारी टनल के भीतर एक सुरक्षित हिस्से में फंसे थे, जिसे भूवैज्ञानिकों ने गोल्डीलॉक्स जोन यानी इंसानों के जीवित बचने के 'सबसे अनुकूल' जगह कहा है। यह मुख्य रूप से सुरंग का वह इलाका था, जहां से अंदर और बाहर ले जाने वाली केबल मौजूद थीं। यह केबल भूमिगत पावरहाउस से ट्रांसमिशन ग्रिड तक जाती हैं। इस मजबूत ढांचे की वजह से वे टनल में आई बाढ़, मिट्टी और मलबे के सीधे बहाव की चपेट में आने से बच गए।

टनल का मुख्य द्वार पूरी तरह से मलबे से बंद हो जाने के बावजूद बचाव कर्मियों ने सुरंग के अंदर बनी संभावित खाली जगहों में पाइपों के जरिए ऑक्सीजन भेजने का प्रयास किया था, ताकि वहां हवा की कमी न हो। मैकेनिकल फोरमैन संजय साह के मुताबिक, सुरंग के अंदर घने अंधकार में नौ दिनों तक पूरी दुनिया से कटे रहने के दौरान उन्होंने हौसला नहीं टूटने दिया। वे लगातार मंत्रों का जाप और प्रार्थना करते रहे, जिससे उन्हें मानसिक रूप से जीवित रहने का हौसला मिला।

कठिन भूख-प्यास का सामना किया : सुरंग के अंदर दोनों के पास ही भोजन या पानी की कोई व्यवस्था नहीं थी। बचाव के बाद जब कबीर महर्जन को सैन्य अस्पताल के आईसीयू में भर्ती कराया गया, तो उन्होंने गंभीर स्थिति में होश में आने पर सबसे पहले बताया कि उन्हें बहुत तेज प्यास लगी है। वे बेहद कठिन परिस्थितियों में केवल अपनी शारीरिक सहनशक्ति के बल पर शरीर में पानी की कमी (डिहाइड्रेशन) का मुकाबला करते हुए जीवित बचे रहे। बाढ़ के मलबे से बंद केबल टनल में रास्ता बनाने के बाद, बचाव कर्मियों ने टनल की छत के ऊपरी हिस्से में एक छोटा सा छेद बनाया, ताकि उसके जरिए रेंगकर अंदर जाया जा सके। इस रास्ते से जब बचाव कर्मियों ने टनल के भीतर फंसे लोगों को आवाज दी, तो उन्हें अंदर से नेपाली भाषा में किसी के जवाब देने की बहुत ही धीमी और हल्की आवाज सुनाई दी। इसी आवाज के जरिए बचाव दल को उनके जीवित होने का पहला सुराग मिला।

ईरान संघर्ष को ट्रंप ने बताया छोटी बात, पिकैक्स माउंटेन पर हमले का भी जिक्र; होर्मुज में हालात कैसे

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान के साथ छह महीने से अधिक समय से चल रहे टकराव को युद्ध मानने से इनकार किया है। उन्होंने उपराष्ट्रपति जेडी वेंस के इस विचार का समर्थन करते हुए कहा, ईरान और अमेरिका के बीच 'अंतराल वाला सैन्य संघर्ष' हो रहा है जो वाशिंगटन के लिए 'छोटी बात' है। उन्होंने ये भी कहा कि अमेरिका ईरान के भूमिगत परमाणु स्थल 'पिकैक्स माउंटेन' पर जल्द हमला कर सकता है। ईरान के अत्यधिक किलेबंद और भूमिगत परमाणु स्थल 'पिकैक्स माउंटेन' पर हमले का बयान ऐसे समय में आया है जब बीते कुछ दिनों में दोनों देशों ने एक दूसरे के सैन्य ठिकानों को जमकर निशाना बनाया है। ऐसे में दोनों देशों का टकराव बढ़ने का खतरा है।

क्या बहुत जल्द हमला कर सकता है अमेरिका : ट्रंप ने ओवल ऑफिस में पत्रकारों से बात करते हुए ईरान के खिलाफ अमेरिकी सैन्य अभियान का बचाव किया। उन्होंने कहा कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य तेहरान को परमाणु हथियार हासिल करने से रोकना है। ट्रंप ने चेतावनी दी कि यदि अमेरिका को पिकैक्स माउंटेन पर कोई गतिविधि मिलती है, तो उसे निशाना बनाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि अमेरिकी खुफिया तंत्र इस स्थल पर गतिविधियों की बारीकी से निगरानी कर रहा है।

कहां है ईरान का परमाणु भंडार : पिकैक्स माउंटेन ईरान के नतांज यूरेनियम संवर्धन सुविधा के पास स्थित है। इसे दो गहरी दबी सुरंग प्रणालियों वाला अत्यधिक किलेबंद भूमिगत परिसर बताया जाता है। कुछ दिन पहले आई वॉल स्ट्रीट जर्नल की रिपोर्ट के मुताबिक इस्राइल ने ईरान से जुड़ा चौंकाने वाला दावा किया है। इस्राइल की खुफिया जानकारी के अनुसार, हजारों सेंट्रीफ्यूज इस गहरी दबी सुविधा में स्थानांतरित कर दिए हैं। इस भूमिगत निर्माण के कारण पारंपरिक हवाई बमबारी का असर नहीं होता है। पिकैक्स माउंटेन काफी अधिक प्रतिरोधी है।

ट्रंप ने एक सवाल के जवाब में तर्क दिया कि अमेरिकी सैन्य हस्तक्षेप के कारण पश्चिम एशिया में एक व्यापक क्षेत्रीय संघर्ष को रोकने में मदद मिली है। उन्होंने कहा, यदि अमेरिका कार्रवाई नहीं करता तो इस्राइल और इसके आसपास अन्य देशों को अधिक गंभीर खतरे का सामना करना पड़ता।

सैन्य कार्रवाई को ईरान के ठिकानों पर अंजाम देने वाली एजेंसी- अमेरिकी सेंट्रल कमान ने बताया था कि सेना ने पिछले सप्ताह ईरानी सैन्य ठिकानों के पर हमले का एक लहर चरण पूरा किया है। इन अभियानों में ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स से जुड़े प्रतिष्ठानों को निशाना बनाया गया। अमेरिका ने जिन जगहों पर बमबारी की, उनमें ईरान का वायु रक्षा प्रतिष्ठान, रडार प्रणालियां, समुद्री संपत्तियां, बारूदी सुरंग बिछाने की क्षमताएं और संचार स्थल जैसे केंद्र शामिल हैं। सेंटकॉम के मुताबिक IRGC द्वारा होर्मुज जलडमरूमध्य में अवरोध के जवाब में अमेरिकी सेना ने हमले किए।

बेल्जियम के प्रधानमंत्री को क्यों याद आई पीएम मोदी की चेतावनी: बोले- भारत ने चेताया था; चीन पर साधा निशाना

ब्रुसेल्स, एजेंसी। बेल्जियम के प्रधानमंत्री बार्ट डी वेवर ने भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पुरानी चेतावनी का जिक्र करते हुए यूरोप की व्यापारिक निर्भरता पर चिंता जताई है। उन्होंने कहा कि यूरोप को अब समझ आ रहा है कि आर्थिक निर्भरता को दबाव बनाने के हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है। चीन का नाम लिए बिना डी वेवर ने उस देश पर परोक्ष निशाना साधा, जिसने यूरोपीय बाजारों और उद्योगों को सबसे ज्यादा प्रभावित किया है। उन्होंने भारत को यूरोप का सबसे अहम रणनीतिक साझेदार बताते हुए दोनों के बीच व्यापार, निवेश, तकनीक और सप्लाई चेन में सहयोग बढ़ाने पर जोर दिया। बेल्जियम के प्रधानमंत्री बार्ट डी वेवर ने कहा कि व्यापारिक निर्भरता के जोखिमों को लेकर अब यूरोप की 'आंखें अचानक खुली हैं'। उन्होंने स्वीकार किया कि भारत ने यूरोपीय देशों को इस खतरे के बारे में काफी पहले चेतावनी दी थी, लेकिन उस समय यूरोप ने भारत की बात को गंभीरता से नहीं लिया। भारत और यूरोप के बीच गहरी रणनीतिक साझेदारी की संभावनाओं पर बात करते हुए डी वेवर ने कहा कि दोनों पक्षों के सामने एक जैसी चुनौतियां हैं। खासकर आर्थिक निर्भरता अब सिर्फ व्यापार तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि इसका इस्तेमाल दबाव बनाने के लिए भी किया जा रहा है। हमारे सामने एक जैसी चुनौतियां हैं। हमारा सामना ऐसे ही पावर ब्लॉक्स (शक्ति समूहों) से हो रहा है, जो एक खास दिशा में बढ़ रहे हैं। एक ऐसी दिशा जो शायद हमें पसंद नहीं है और हमें अपनी मर्जी के खिलाफ कुछ करने के लिए मजबूर किया जाना भी पसंद नहीं है। हमें यह पसंद नहीं है कि निर्भरता का इस्तेमाल हमारे खिलाफ हथियार के तौर पर किया जाए। डी वेवर ने इसके बाद यूरोप को दी गई भारत की पुरानी चेतावनियों का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बहुत पहले ही यूरोप को इस तरह की आर्थिक निर्भरता के खतरे के बारे में आगाह किया था, लेकिन तब उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया गया। आपने यह इतिहास देखा है। आपके प्रधानमंत्री ने बहुत पहले ही यूरोप को इस बारे में चेतावनी दी थी।

सऊदी अरब को अमेरिका की सौगात: पांच अरब डॉलर के हथियार सौदे को मंजूरी; जेडीएएम किट-बमों से खाड़ी में बढ़ेगी ताकत

वॉशिंगटन डीसी, एजेंसी। अमेरिका ने सऊदी अरब को करीब 5 अरब डॉलर के हथियार और सैन्य उपकरण बेचने की संभावित डील को मंजूरी दे दी है। प्रस्तावित बिक्री में सटीक निशाना लगाने वाली जेडीएएम-ईआर प्रणालियां, हजारों बम और उनसे जुड़े उपकरण शामिल हैं। अमेरिकी विदेश विभाग ने इसकी जानकारी कांग्रेस को दी है।

प्रस्तावित हथियार सौदे में क्या-क्या शामिल है : अमेरिकी विदेश विभाग के अनुसार, सऊदी अरब ने 5,004 केएमयू-572 जेडीएएम गाइडेंस किट और 5,000 केएमयू-556 जेडीएएम गाइडेंस किट की मांग की है। इसके अलावा 5,004 बीएलयू-111 500-पाउंड सामान्य उपयोग वाले बम और 5,000 बीएलयू-117 2,000-पाउंड बम भी प्रस्तावित पैकेज का हिस्सा हैं। डील में फ्यूज सिस्टम, टारगेट डिटेक्टर, कंटेनर, स्पेयर पार्ट्स, सपोर्ट उपकरण और अन्य जरूरी सामान भी शामिल होंगे। इसके साथ अमेरिकी सरकार और ठेकेदारों की इंजीनियरिंग, तकनीकी और लॉजिस्टिक सेवाएं भी प्रस्तावित हैं।

अमेरिका सऊदी अरब को ये हथियार क्यों देना चाहता है : अमेरिकी विदेश विभाग का कहना है कि इस संभावित बिक्री से सऊदी अरब की सुरक्षा मजबूत होगी और खाड़ी क्षेत्र में राजनीतिक स्थिरता तथा आर्थिक प्रगति को बढ़ावा मिलेगा। अमेरिका के मुताबिक, इससे सऊदी अरब की मौजूदा और भविष्य की क्षेत्रीय चुनौतियों से निपटने की क्षमता बेहतर होगी। विभाग ने कहा कि इससे सऊदी अरब की अपनी जमीन की रक्षा करने की क्षमता बढ़ेगी और अमेरिकी तथा खाड़ी क्षेत्र के सहयोगी देशों की सेनाओं के साथ उसकी सैन्य प्रणालियों की बेहतर तालमेल क्षमता विकसित होगी। क्या इस सौदे से क्षेत्र का सैन्य संतुलन बदलेगा अमेरिकी आकलन के मुताबिक, प्रस्तावित लेनदेन से क्षेत्रीय सैन्य संतुलन में कोई बदलाव नहीं होगा। अमेरिका का यह भी कहना है कि सऊदी अरब इन हथियारों और सेवाओं को अपनी सैन्य व्यवस्था में आसानी से शामिल कर सकेगा। इस संभावित बिक्री के लिए मुख्य ठेकेदार बोइंग होगा, जिसका मुख्यालय वर्जीनिया में है। अमेरिकी सरकार ने कहा कि फिलहाल इस सौदे के साथ किसी ऑफसेट समझौते की जानकारी नहीं है। क्या इस हथियार सौदे का पश्चिम एशिया के तनाव से भी संबंध है यह संभावित हथियार सौदा ऐसे समय सामने आया है, जब पश्चिम एशिया में सुरक्षा स्थिति को लेकर चिंताएं बढ़ी हुई हैं। क्षेत्र में अमेरिका और ईरान के बीच जारी संघर्ष, सऊदी अरब को निशाना बनाकर हुए हमलों और यमन के हूती विद्रोहियों की गतिविधियों ने खाड़ी क्षेत्र की सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ाई है। ऐसे माहौल में सऊदी अरब अपनी जमीन और महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को संभावित हवाई तथा मिसाइल खतरों से बचाने की क्षमता मजबूत करना चाहता है। अमेरिका और सऊदी अरब के बीच हालिया सहयोग केवल रक्षा क्षेत्र तक सीमित नहीं है।

मॉस्को जाने पर गिरफ्तारी का खतरा, फिर भी तैयार थे जेलेंस्की के चीफ ऑफ स्टाफ बुदानोव; क्या बोले

कीव, एजेंसी। इस वर्ष के शुरू में में जब शांति वार्ता का एक दौर खत्म हुआ, तो यूक्रेनी वार्ताकारों को रूसियों की तरफ से एक हैरान करने वाला प्रस्ताव मिला। इसमें कहा गया कि यूक्रेनी अधिकारी चाहें तो मॉस्को की उड़ान पकड़ सकते हैं और वार्ता जारी रख सकते हैं। इसका फायदा यह था कि राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मुलाकात की संभावना थी और नुकसान यह था कि उन्हें गिरफ्तार भी किया जा सकता था, या उससे भी बुरा कुछ हो सकता था।

प्रस्ताव ने इससे पहले जिनेवा में वार्ता के दौरान यूक्रेनी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने वाले किरीलो बुदानोव के सामने एक गंभीर असमंजस उत्पन्न कर दिया। रूस ने उन पर आतंकवाद के आरोप लगा रखे हैं, जो तब लगाए गए थे जब वह यूक्रेन के सैन्य जासूसी प्रमुख थे। लेकिन वार्ता के माध्यम से शांति हासिल करने के लिए वह कोई भी अप्रत्याशित कदम उठाने के लिए तैयार थे। कभी रूस से डटकर मुकाबला करने वाले लेफ्टिनेंट जनरल बुदानोव मौजूदा समय में यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के चीफ ऑफ स्टाफ हैं और किसी भी कीमत पर शांति चाहते हैं। बुदानोव का कहना है, बातचीत आज नहीं तो कल किसी नतीजे पर जरूर पहुंचेगी। आप पूरी जिंदगी युद्ध नहीं लड़ सकते। यूक्रेनी सरकार में नंबर दो की हैसियत रखने वाले बुदानोव ने एक इंटरव्यू में कहा, मैं युद्ध खत्म करने वाले किसी भी कदम के लिए तैयार हूं। बशर्ते यूक्रेन को इसकी शर्तें मंजूर हों। उन्होंने मॉस्को दौरे के प्रस्ताव के बारे में खुलासा किया, जिसकी रिपोर्ट पहले सामने नहीं आई थी। यही नहीं यह दौरान भी परवान नहीं चढ़ सका था, और आगे बातचीत ठप हो गई थी। **वार्ता फिर शुरू होने की उम्मीद :** जंग लगातार जारी रहने के बीच बुदानोव ने सितंबर के आखिर तक अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की मध्यस्थता में शांति वार्ता फिर शुरू होने की उम्मीद जताई है। विश्लेषकों का कहना है, शांति की पहल की बुदानोव की मंशा उनके व्यक्तित्व के दो अलग पहलुओं को सामने लाती है। वह एक ऐसे सैनिक के तौर पर अपनी पहचान बनाए रखना चाहते हैं जिसने रूस के खिलाफ जमकर जंग लड़ी। पूर्वी यूक्रेन में 2014 में लंबे समय से सुलगते रहे युद्ध के दौरान बुदानोव ने दुश्मन की सीमा के पीछे जाकर कमांडो छापों का नेतृत्व किया था, जिसमें एक छापे में रूसी जनरल के बेटे की मौत हो गई थी। 2022 में रूसी हमले के बाद उन्होंने यूक्रेन के कुछ सबसे दुस्साहसिक जवाबी हमलों की रूपरेखा तैयार करने में मदद की। अब वह खून-खराबा खत्म करने की पहल में भी सबसे आगे हैं।

450 साल पुराना दुनिया का नक्शा कितना बदला, कैसे अफ्रीकी देश के चलते भारत को मिल सकता है न्याय

संयुक्त राष्ट्र, एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) में पारंपरिक दुनिया के नक्शे (मर्केटर) को बदलने के लिए लाए गए करेक्ट द मैप प्रस्ताव को भारी बहुमत से पारित कर दिया है। 16वीं सदी का मर्केटर नक्शा उत्तरी गोलार्ध के देशों को बड़ा और भूमध्य रेखा के पास के देशों को छोटा दिखाता है। नए और सटीक अनुमान वाले इक्वल अर्थ मैप से अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका और अन्य भूमध्यरेखीय क्षेत्रों का वास्तविक और बड़ा आकार सामने आएगा। वहीं, यूरोप, रूस और कनाडा जैसे इलाके मौजूदा मर्केटर नक्शे की तुलना में नए नक्शे में छोटे दिखाई देंगे। इस प्रस्ताव के पक्ष में 164 देश रहे, जबकि अमेरिका ने इसके खिलाफ वोट किया और छह देशों ने मतदान में हिस्सा नहीं लिया। नया नक्शा अफ्रीका को अधिक सटीक रूप से दर्शाता है। नए नक्शे को टोगो ने पेश किया जबकि अफ्रीकी संघ के सदस्यों ने पुरजोर समर्थन किया। मानचित्र सुधार प्रस्ताव फ्रांस और ब्रिटेन सहित 164 देशों के समर्थन से पारित हो गया। अमेरिका इकलौता देश रहा, जिसने इसके खिलाफ मतदान किया और छह देशों ने मतदान में भाग नहीं लिया। 16वीं शताब्दी से उपयोग हो रहे मर्केटर मानचित्र की आलोचना की जाती रही है क्योंकि यह अफ्रीका को ग्रीनलैंड के समान आकार का दिखाता है, जबकि वास्तव में यह उससे 14 गुना बड़ा है।

अब वैश्विक नक्शों में बदलाव करना जरूरी : इस प्रस्ताव पर मतदान कि अहमियत का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अब आने वाले दिनों में दुनियाभर में दिखाए-पढ़ाए जाने वाले वैश्विक नक्शों में बदलाव करना जरूरी हो जाएगा और उसकी जगह नए नक्शे ले लेंगे। इतना ही नहीं मौजूदा नक्शे में दिखने वाले महाद्वीप के साथ भारत और कई देशों की स्थिति में बड़ा बदलाव हो जाएगा। ऐसे में यह जानना अहम है कि आखिर संयुक्त राष्ट्र में वैश्विक नक्शे पर बदलाव कराने का दम रखने वाले इस प्रस्ताव की जरूरत क्यों पड़ी अब प्रस्ताव मंजूर हो चुका है तो क्या-क्या बदल सकता है आइये जानते हैं...

संयुक्त राष्ट्र महासभा में पेश प्रस्ताव वैश्विक स्तर पर दर्शाए जाने वाले मानचित्र को बदलने और सदियों पुराने 'मर्केटर प्रोजेक्शन' मैप की जगह समान-क्षेत्र दर्शाने वाले मानचित्रों को वैश्विक मानक बनाने से जुड़ा था। इस प्रस्ताव को अफ्रीकी देश टोगो की ओर से प्रायोजित किया गया, जिसे 55-सदस्यीय अफ्रीकी संघ का समर्थन मिला। दरअसल, इस वक्त दुनिया में विश्व का जो मानचित्र दिखाया जाता है, वह 400 साल से भी ज्यादा पुराना है और इसे गेरहार्डस मर्केटर की ओर से दुनियाभर में व्यापार के लिए जाने वाले नाविकों की मदद के लिए बनाया गया था। यह पारंपरिक मानचित्र ध्रुवों के पास के देशों को उनके वास्तविक आकार से बहुत बड़ा और भूमध्य रेखा (इक्वेटर) के पास के क्षेत्रों को बहुत छोटा दिखाता है। उदाहरण के लिए मौजूदा नक्शे पर अफ्रीका और ग्रीनलैंड एक ही आकार के दिखाई देते हैं, जबकि वास्तविकता में अफ्रीका एक महाद्वीप है, जो कि ग्रीनलैंड से 14 गुना बड़ा है। ऐसा ही कई और अन्य देशों के भी साथ की स्थिति है। अफ्रीका अपने असल आकार के मुकाबले छोटा दिखाए जाने को लेकर ही नाराजगी जाहिर करता रहा है।

ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर छाया संकट: पहली बार आईएईए ने माना नियमों का पालन नहीं हुआ, क्या लगेगा प्रतिबंध

तेहरान, एजेंसी। ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर अंतरराष्ट्रीय दबाव अब और बढ़ता दिख रहा है। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी ने संयुक्त राष्ट्र की परमाणु निगरानी संस्था आईएईए के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के सामने ऐसा प्रस्ताव रखने की तैयारी की है, जिसमें ईरान को परमाणु अप्रसार की अपनी कानूनी जिम्मेदारियों का पालन न करने के मामले में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद तक भेजने की बात है। यह मामला इसलिए बेहद गंभीर है क्योंकि जून 2025 में आईएईए बोर्ड ने करीब 20 साल बाद पहली बार ईरान को अपनी परमाणु अप्रसार संबंधी जिम्मेदारियों का पालन न करने वाला पाया था।

मसौदे में ईरान के खिलाफ क्या कहा गया : प्रस्ताव अभी बातचीत के दौर में है और आईएईए बोर्ड को औपचारिक रूप से नहीं सौंपा गया है। इसमें आईएईए के महानिदेशक राफेल ग्रॉसी से प्रस्ताव और पहले पारित प्रस्तावों को आईएईए के सभी सदस्यों के साथ संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद और महासभा तक पहुंचाने को कहा गया है। प्रस्ताव में ईरान के परमाणु कार्यक्रम से पैदा चुनौतियों का कूटनीतिक समाधान निकालने का समर्थन भी किया गया है। सभी पक्षों से बातचीत में रचनात्मक तरीके से शामिल होने की अपील की गई है। प्रस्ताव में बदलाव भी संभव है। औपचारिक रूप से पेश होने के बाद इस पर अगले सप्ताह वियना में आईएईए बोर्ड की बैठक में मतदान होगा।

ईरान की सबसे बड़ी परेशानी क्या : परमाणु अप्रसार संधि के तहत ईरान पर अपने सभी परमाणु पदार्थ और गतिविधियों की जानकारी देने तथा आईएईए के निरीक्षकों को यह जांचने देने की कानूनी जिम्मेदारी है कि परमाणु सामग्री का इस्तेमाल शांतिपूर्ण कामों के अलावा कहीं नहीं हो रहा। जून 2025 में अमेरिका और इस्राइल के ईरान के परमाणु ठिकानों पर हमलों के बाद से ईरान ने प्रभावित परमाणु स्थलों पर आईएईए निरीक्षकों को प्रवेश नहीं दिया है। एजेंसी छह महीने से अधिक समय से हथियार बनाने की क्षमता के करीब पहुंच चुके यूरेनियम के भंडार की स्थिति भी सत्यापित नहीं कर पाई है। आईएईए ने हाल में चेतावनी दी कि निरीक्षकों को प्रवेश न देना और परमाणु सामग्री की पुष्टि न हो पाना प्रसार का जोखिम पैदा करता है, जिस पर तुरंत ध्यान देने की जरूरत है।

ईरान के पास कितना यूरेनियम और खतरा कितना बड़ा : आईएईए के अनुसार ईरान के पास 440.9 किलोग्राम यूरेनियम का भंडार है, जिसे 60 फीसदी तक शुद्धता पर समृद्ध किया गया है। हथियार बनाने के लिए आम तौर पर करीब 90 फीसदी शुद्धता वाला यूरेनियम चाहिए होता है। यानी ईरान का मौजूदा भंडार तकनीकी रूप से उस स्तर से बहुत दूर नहीं है। आईएईए प्रमुख राफेल ग्रॉसी ने पिछले साल कहा था कि यह मात्रा ईरान को सैद्धांतिक रूप से 10 परमाणु बम बनाने में सक्षम कर सकती है, अगर वह अपने कार्यक्रम को हथियार बनाने की दिशा में ले जाने का फैसला करे। उन्होंने साफ किया था कि इसका मतलब यह नहीं है कि ईरान के पास परमाणु हथियार मौजूद है।

यूरेनियम के पुराने निशानों की जांच क्यों अहम : आईएईए की वर्षों से चल रही जांच में ईरान के कुछ ऐसे स्थानों पर यूरेनियम के निशान मिले हैं, जिनके बारे में पहले जानकारी नहीं दी गई थी। एजेंसी की हालिया गोपनीय रिपोर्ट के अनुसार इन निशानों की जांच में भी कोई प्रगति नहीं हुई है। पश्चिमी देशों के अधिकारियों को शक है कि ये निशान इस बात के संकेत हो सकते हैं कि ईरान ने 2003 तक गुप्त परमाणु हथियार कार्यक्रम चलाया था। ईरान इन आरोपों को खारिज करता है और लगातार कहता रहा है कि उसका परमाणु कार्यक्रम पूरी तरह शांतिपूर्ण है। ईरान को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद तक भेजने का मतलब मामले को आईएईए से आगे संयुक्त राष्ट्र की सबसे शक्तिशाली संस्था के सामने ले जाना होगा। सुरक्षा परिषद के पास आगे कानूनी रूप से बाध्यकारी कदम उठाने की क्षमता है, जिनमें प्रतिबंध और संपत्ति फ्रीज करने जैसे कदम शामिल हो सकते हैं। हालांकि, इस मामले में कड़ी संयुक्त राष्ट्र कार्रवाई की संभावना सीमित मानी जा रही है, क्योंकि ईरान के सहयोगी रूस और चीन सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य हैं और उनके पास वीटो का अधिकार है। पश्चिमी देशों की ओर से प्रस्ताव लाने की तैयारी के बावजूद कूटनीति का रास्ता पूरी तरह बंद नहीं हुआ है। मसौदे में भी ईरान के परमाणु कार्यक्रम से जुड़ी चिंताओं का राजनयिक समाधान निकालने की बात कही गई है। ईरान और आईएईए के बीच सहयोग और बातचीत की कमी ने स्थिति को ज्यादा गंभीर बनाया है।

मोहम्मद शमी की वनडे टीम में हो सकती है वापसी

दिलीप ट्रॉफी फाइनल पर चयनकर्ताओं की नजर

नईदिल्ली, एजेंसी। भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी की वनडे टीम में वापसी का रास्ता खुल सकता है. भारत को 27 सितंबर से वेस्टइंडीज के खिलाफ वनडे सीरीज खेलनी है और इस सीरीज के लिए टीम चयन के दौरान शमी के नाम पर भी चर्चा हो सकती है. इसकी बड़ी वजह भारत के कई प्रमुख तेज गेंदबाजों का उस समय एशियन गेम्स के लिए जापान में होना है.

एशियन गेम्स में होंगे भारत के प्रमुख तेज गेंदबाज – जापान में 19 सितंबर से एशियन गेम्स शुरू होने हैं. इसी दौरान भारतीय टी20 टीम इस टूर्नामेंट में हिस्सा लेगी. भारत के प्रमुख तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह, अर्शदीप सिंह और हर्षित राणा एशियन गेम्स की टीम का हिस्सा होंगे. वहीं 27 सितंबर से भारत और वेस्टइंडीज के बीच वनडे सीरीज शुरू होनी है. ऐसे में बुमराह, अर्शदीप और हर्षित के वेस्टइंडीज के खिलाफ वनडे टीम का हिस्सा बनने की संभावना नहीं है. इससे चयनकर्ताओं को तेज गेंदबाजी विभाग में दूसरे विकल्पों की तरफ देखना होगा.

शमी ने फिटनेस को लेकर दिया जवाब – प्मोहम्मद शमी पिछले कुछ समय से अपनी फिटनेस को लेकर सवालों के घेरे में रहे हैं. मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर भी उनकी फिटनेस को लेकर बयान दे चुके हैं.

सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा और गुरनूर बरार रेस में

वेस्टइंडीज सीरीज के लिए तेज गेंदबाजों में मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा और गुरनूर बरार का नाम सामने आ रहा है. हालांकि चयनकर्ता अगर टीम में चार तेज गेंदबाज रखना चाहते हैं तो मोहम्मद शमी एक मजबूत विकल्प बन सकते हैं. शमी के पक्ष में सबसे बड़ी बात उनका अनुभव है. बुमराह की गैरमौजूदगी में भारतीय टीम के पास तेज गेंदबाजी विभाग में अनुभव के ज्यादा विकल्प मौजूद नहीं होंगे. ऐसे में शमी की वापसी टीम के पेस अटैक को मजबूती दे सकती है.

मोड्रिक ने संन्यास की अटकलों पर लगाया विराम

नेशंस लीग में खेलेंगे

नई दिल्ली, एजेंसी। मिलान लुका मोड्रिक ने क्रोएशिया के लिए अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल खेलना जारी रखने का फैसला किया है। इसी के साथ उन अटकलों पर विराम लग गया, जिनमें अनुभवी मिडफील्डर के नेशनल टीम से संन्यास लेने के कयास लगाए जा रहे थे। क्रोएशियाई फुटबॉल फेडरेशन (एचएनएस) ने शनिवार को पुष्टि की है कि मोड्रिक चेक रिपब्लिक, स्पेन और इंग्लैंड के खिलाफ होने वाले नेशंस लीग मुकाबलों के लिए टीम का हिस्सा होंगे। यह फैसला मोड्रिक के हाल ही में फीफा वर्ल्ड कप में क्रोएशिया का प्रतिनिधित्व करने के बाद आया है, जहां उनकी टीम को राउंड ऑफ 32 में पुर्तगाल के हाथों 1-2 से हार का सामना करना पड़ा था। टूर्नामेंट के बाद उनके अंतरराष्ट्रीय भविष्य को लेकर संदेह पैदा हो गया था, खासकर इसलिए क्योंकि यह मिडफील्डर सितंबर में 41 साल का होने वाला है। हालांकि, नए नियुक्त हेड कोच स्लेवेन बिलिच और एचएनएस अध्यक्ष मारिजन कुस्टिक के साथ बातचीत के बाद मोड्रिक ने क्रोएशिया के आगामी आधिकारिक मुकाबलों के लिए खुद को उपलब्ध कराया है। एसी मिलान का यह मिडफील्डर क्रोएशिया के लिए एक अहम खिलाड़ी बना हुआ है, जिसने अपने देश के लिए 202 मैच खेले हैं। वह लगभग दो दशकों से नेशनल टीम का अहम हिस्सा रहे हैं और फीफा वर्ल्ड कप 2018 में क्रोएशिया के सफल सफर के दौरान उन्होंने अहम भूमिका निभाई थी, जब टीम रनर-अप रही थी। बिलिच ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर जारी एक आधिकारिक बयान में कहा, स्वाभाविक रूप से, लुका के फैसले से मुझे बेहद खुशी हुई है। हम सभी जानते हैं कि वह मैदान के अंदर और बाहर क्रोएशिया को क्या दे सकते हैं। मैं 14 साल बाद उनके साथ फिर से काम करने के लिए उत्साहित हूं। हम दोनों का एक ही मकसद है - क्रोएशिया को टॉप टीमों में बनाए रखना, जीत हासिल करना और दुनिया की बेहतरीन टीमों के बराबर लाना। मोड्रिक ने एसी मिलान के साथ अपना क्लब करियर भी जारी रखा है। इस मिडफील्डर ने हाल ही में इटैलियन क्लब के साथ अपना कॉन्ट्रैक्ट जून 2027 तक बढ़ा दिया है। क्रोएशिया के दिग्गज मिडफील्डर लुका मोड्रिक ने राष्ट्रीय टीम के साथ अपना सफर जारी रखने का फैसला किया है। इस फैसले के साथ उन्हें अब अपने 202 अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों के रिकॉर्ड को और आगे बढ़ाने का मौका मिलेगा, साथ ही वह यूरोपीय फुटबॉल के सबसे शानदार अंतरराष्ट्रीय करियरों में से एक को और लंबा कर सकेंगे। मोड्रिक ने साल 2006 में क्रोएशिया के लिए सीनियर डेब्यू किया था और तब से वह टीम के अहम खिलाड़ी बने हुए हैं।

सीपीएल 2026

सुनील नरेन का चला जादू, त्रिनबागो नाइट राइडर्स ने बारबाडोस को 35 रन से हराया

बारबाडोस, एजेंसी। कैरेबियन प्रीमियर लीग (सीपीएल) 2026 का 27वां मुकाबला किंग्सटन ओवल, ब्रिजटाउन में खेला गया। बारबाडोस ट्राइडेंट्स और त्रिनबागो नाइट राइडर्स के बीच खेला गया। त्रिनबागो ने 35 रन से मैच जीता। बारबाडोस ने टॉस जीतकर गेंदबाजी का फैसला किया था। पहले बल्लेबाजी करने उतरी त्रिनबागो नाइट राइडर्स ने 6 विकेट पर 147 रन बनाए थे। कप्तान निकोलस पूरन ने 37 गेंदों पर 7 छक्कों और 2 चौकों की मदद से 59 रन की पारी खेली। इसके अलावा, सलामी बल्लेबाज कोलिन मुनरो ने 32 गेंदों पर 38 रन बनाए। किरोन पोलार्ड ने 15 और जोशुआ डा सिल्वा ने 10 रन बनाए थे। बारबाडोस के लिए गुडाकेस मोती ने 3, मुजीब उर रहमान ने 2 और जकीम पोलार्ड ने 1 विकेट लिए। 148 रन के सामान्य लक्ष्य का पीछा करने उतरी बारबाडोस की बल्लेबाजी पूरी तरह बिखर गई। बारबाडोस 18.3 ओवर में 112 रन पर सिमट गई और 35 रन से मैच हार गई। जैकरी कार्टर और शरफेन रदरफोर्ड ने 21-21 रन बनाए। इसके अलावा, डेनियल सैम्स ने 17, ब्रैंडन किंग्स और सैड्रैक डेसकार्टेस ने 16-16 रन बनाए। क्विंटन डि कॉक और रिवाल्डो क्लार्क जैसे बल्लेबाज शून्य पर आउट हुए। त्रिनबागो के लिए सुनील नरेन ने बेहतरीन और मैच विजयी स्पेल फेंका। नरेन ने 3.3 ओवर में 12 रन देकर 4 विकेट लिए। इसके अलावा, जेड गुली ने 4 ओवर में 20 रन देकर 3 विकेट लिए। लाहिरु कुमारा ने 2 और अकील हुसैन ने 1 विकेट लिया।

सुनील नरेन को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया

त्रिनबागो नाइट राइडर्स की सीजन के नौवें मैच में यह तीसरी जीत थी। 6 अंकों के साथ टीम छठे स्थान पर है। वहीं, बारबाडोस की सीजन के छठे मैच में यह चौथी हार थी। 4 अंक के साथ बारबाडोस आखिरी (सातवें) स्थान पर है। एंटिगुआ एंड बरबुडा फॉल्कंस 9 मैचों में 5 जीत के साथ 11 अंक लेकर पहले स्थान पर है।

रुमेश पथिरगे ने रचा इतिहास, डायमंड लीग खिताब जीतने वाले पहले श्रीलंकाई बने

ब्रसेल्स, एजेंसी। श्रीलंका के जैवलिन थ्रोअर रुमेश थरंगा पथिरगे ने इतिहास रच दिया है। वह डायमंड लीग चैंपियन बनने वाले पहले श्रीलंकाई बन गए हैं। दुनिया के नंबर 1 जेवलिन थ्रोअर रुमेश ने ब्रसेल्स के किंग बाउडौइन स्टेडियम में आयोजित डायमंड लीग फाइनल में खिताब जीत सीजन का अंत शानदार और यादगार अंदाज में किया। 23 साल के इस खिलाड़ी ने किंग बाउडौइन स्टेडियम में अपनी तीसरी कोशिश में 89.04 मीटर की बड़ी दूरी तय करके जीत पक्की की। पोलैंड के डेविड वेगनर 87.47 मीटर दूसरे स्थान पर रहे। पूर्व ओलंपिक चैंपियन त्रिनिदाद और टोबैगो के केशोर्न वालकॉट ने सीजन का सबसे अच्छा थ्रो फेंका और 83.99 मीटर के साथ तीसरा स्थान हासिल किया। ग्रेनेडा के दो बार के वर्ल्ड चैंपियन एंडरसन पीटर्स 83.70 मीटर के साथ चौथे स्थान पर रहे। जीत के बाद रुमेश ने कहा, 'मैं डायमंड लीग फाइनल जीतने वाला पहला श्रीलंकाई हूं और इससे मुझे बहुत गर्व है। मैं डायमंड लीग में मुकाबला करने के लिए बहुत उत्सुक था और मैं बहुत खुश हूं कि मुझे फाइनल में जीत मिली। मुझे पता है कि मैं आज 89.04 से कहीं बेहतर कर सकता था, लेकिन हालात मुश्किल थे। मुझे बहुत ज्यादा तापमान की आदत है। मैं अगले कुछ सालों में अटैक करने और मीटिंग रिकॉर्ड तोड़ने की कोशिश करूंगा। ' इस जीत ने श्रीलंकाई खिलाड़ी के लिए एक शानदार डायमंड लीग कैंपेन पूरा किया, जो सीजन के दौरान शानदार प्रदर्शन के बाद सर्किट लीडर के तौर पर फाइनल में पहुंचे थे। श्रीलंकाई स्टार ने इस सीजन में शानदार प्रदर्शन किया है, जिसमें उनके पांच डायमंड लीग मैचों में से चार में जीत मिली है। वह रबात में अपनी सीरीज में डेब्यू करते हुए दूसरे नंबर पर रहे, लेकिन रोम और ज्यूरिख दोनों जगह उन्होंने 92 मीटर से ज्यादा फेंका, और अब तक के टॉप टेन थ्रोअर में शामिल हो गए। रोम में श्रीलंकाई खिलाड़ी की 92.62 मीटर की वर्ल्ड लीड ने उन्हें इस सीजन में वर्ल्ड रैंकिंग में टॉप पर पहुंचने में मदद की है। 2022 में चैंपियन रहे भारतीय स्टार नीरज चोपड़ा ने इंजरी की वजह से फाइनल में हिस्सा नहीं लिया था।

साई ने झटके

5 विकेट

साई किशोर की बेहतरीन गेंदबाजी, ग्लॉस्टरशायर की डर्बीशायर पर रोमांचक जीत

ब्रिस्टल, एजेंसी। आर साई किशोर (5 विकेट) की बेहतरीन गेंदबाजी की बदौलत ग्लॉस्टरशायर ने रॉथसे काउंटी चैंपियनशिप डिविजन दो मैच के बेहद रोमांचक अंत में डर्बीशायर को 213 रन से हरा दिया। सीट यूनिक स्टेडियम में खेले गये मुकाबले में ग्लॉस्टरशायर के इस विदेशी खिलाड़ी ने 18 ओवर में 20 रन देकर 5 विकेट लिए। 319 रन के लक्ष्य का पीछा कर रही बेबस डर्बीशायर की टीम आखिरी सत्र में 39 ओवर के अंदर केवल 105 रन पर सिमट गई। एड मिडलटन ने 17 रन देकर 2 विकेट और ओली प्राइस ने 59 रन देकर 3 विकेट लिए। डर्बीशायर के सभी 10 विकेट स्पिन गेंदबाजो ने झटके। यह घरेलू टीम के लिए किस्मत में शानदार बदलाव था, क्योंकि मैच के पहले दिन उसका स्कोर पांच विकेट पर मात्र 37 रन था। इससे पहले ग्लॉस्टरशायर ने अपनी दूसरी पारी में 210 रन और जोड़े। माइल्स हैमंड ने 118 और जेम्स ब्रेसी ने नाबाद 104 रन बनाए। दोनों ने चौथे विकेट के लिए 165 रन की बड़ी साझेदारी की और ग्लॉस्टरशायर ने 5 विकेट पर 359 रन बनाकर पारी घोषित की। ब्रेसी 2007 में ग्लॉस्टर के आकर्डेकन मीडो में एलेक्स गिडमैन के बाद प्रथम श्रेणी मैच में दो शतक लगाने वाले ग्लॉस्टरशायर के पहले खिलाड़ी बने। तालिका में सबसे नीचे चल रही ग्लॉस्टरशायर ने 19 अंक हासिल किए और लगातार छह हार का सिलसिला समाप्त किया। इस सीजन में उसकी दोनों जीत डर्बीशायर के खिलाफ ही आई हैं। ब्रिस्टल से डर्बीशायर को सिर्फ़ चार अंक मिले और टीम को भारी निराशा के साथ लौटना पड़ा। जब ग्लॉस्टरशायर ने 3 विकेट पर 149 रन से आगे खेलना शुरू किया, तब डर्बीशायर को जल्दी विकेट लेने की ज़रूरत थी। लेकिन फील्डिंग में उससे कई गलतियां हुईं। शोएब बशीर ने अपनी ही गेंद पर ब्रेसी का कैच छोड़ दिया, तब उनका स्कोर सिर्फ 5 रन था। वहीं मैट मॉन्टगोमरी ने वापसी का कैच हाथ से निकाल दिया और हैमंड को 77 रन पर जीवनदान मिल गया। ग्लॉस्टरशायर की चौथे विकेट की जोड़ी ने इसका पूरा फ़ायदा उठाया और 143 गेंदों में शतकीय साझेदारी कर मैच पर अपना दबदबा बना लिया। ब्रेसी ने 75 गेंदों में अपना अर्धशतक पूरा किया।

ग्लॉस्टरशायर ने डर्बीशायर को 9 विकेट से हराया

वहीं हैमंड ने जैक मॉर्ली की गेंद को फाइन लेग की ओर खेला और दो रन लेकर 182 गेंदों में इस सीजन का अपना तीसरा और करियर का आठवां प्रथम श्रेणी शतक पूरा किया। डर्बीशायर ने नई गेंद ली और तेज़ गेंदबाज़ बेन एटचिसन और ब्रेट रैंडेल को दोबारा गेंदबाज़ी पर लगाया। लेकिन ब्रेसी और हैमंड ने लंच तक स्कोर को 3 विकेट पर 268 रन तक पहुंचा दिया। ग्लॉस्टरशायर को सुरक्षित स्थिति में पहुंचाने के बाद हैमंड ने मार्टिन एंडरसन की गेंद को मिडविकेट की ओर खेला, जहां मॉन्टगोमरी ने उनका कैच पकड़कर उनकी पारी खत्म कर दी। हैमंड ने समझदारी से डिफेंस और आक्रमण का अच्छा संतुलन बनाकर बल्लेबाजी की थी। इसके बाद ब्रेसी भी तीन अंकों तक पहुंच गए। उन्होंने 143 गेंदों पर सात चौकों और दो छक्कों की मदद से इस सीज़न का अपना पांचवां शतक पूरा किया और टीम ने पारी घोषित कर दी। इसके साथ ही वह 1919 में हैरी स्मिथ के बाद एक मैच में दो शतक लगाने वाले ग्लॉस्टरशायर के पहले विकेटकीपर भी बने। डर्बीशायर को जीत के लिए लगभग सात रन प्रति ओवर की दर से रन बनाने थे, लेकिन उसकी कोशिश जीत से ज़्यादा मैच बचाने तक ही सीमित रही। ग्लॉस्टरशायर ने दोनों छोर से स्पिन गेंदबाज़ी शुरू की और बल्लेबाज़ के आसपास क़रीबी फ़ील्डर लगा दिए।

हमारी बल्लेबाजी लड़खड़ा गई, पूरी पारी के दौरान संघर्ष किया: फातिमा सना

नई दिल्ली, एजेंसी। दुबई पाकिस्तान को भारत के खिलाफ शनिवार को दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में खेले गए विमेंस एशिया कप 2026 के 9वें मुकाबले में 7 विकेट से करारी हार का सामना करना पड़ा। हार के बाद पाकिस्तानी कप्तान फातिमा सना ने स्वीकार किया है कि उनकी टीम की बल्लेबाजी खराब रही और पूरी पारी के दौरान टीम ने संघर्ष किया। पाकिस्तानी कप्तान फातिमा सना ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला लिया, लेकिन ये निर्णय टीम पर भारी पड़ गया और पाकिस्तानी टीम 18.1 ओवरों में सिर्फ 55 रन पर सिमट गई। आलम ये रहा कि पाकिस्तान के सिर्फ 2 बल्लेबाज दहाई का आंकड़ा छू सकीं। चार खिलाड़ी अपना खाता तक नहीं खोल सकीं। पहले बल्लेबाजी करने के फैसले पर पाकिस्तानी कप्तान ने कहा, हमारी बल्लेबाजी लड़खड़ा गई पूरी पारी के दौरान हमने संघर्ष किया। हमें पता था कि विकेट ताजा है और हम अधिक से अधिक रन बनाना चाहते थे। हमें भरोसा था कि हमारी गेंदबाजी इकाई अच्छी है। आसान लक्ष्य का पीछा करने उतरी भारतीय टीम ने 29 के स्कोर तक अपने 3 विकेट गंवा दिए थे। हालांकि, इसके बाद टीम ने 8.4 ओवरों में 7 विकेट शेष रहते मैच अपने नाम कर लिया। पाकिस्तान के लिए तीनों विकेट फातिमा सना (3 ओवरों में 17 रन देकर 3 विकेट) हासिल किए। कप्तान सना निजी उपलब्धि से ज्यादा टीम की जीत को तरजीह देती हैं। उन्होंने कहा, मैंने तीन विकेट लिए, लेकिन फिर भी हम मैच हार गए, इसलिए इसका कोई मायने नहीं है। हमें जीत की जरूरत थी, इसलिए तीन विकेट लेने से कोई फर्क नहीं पड़ता। पाकिस्तानी टीम 2 में से 1 मैच गंवाने के बावजूद ग्रुप-ए की प्वाइंट्स टेबल में दूसरे स्थान पर मौजूद है। अब पाकिस्तानी टीम 7 सितंबर को अपने अंतिम ग्रुप मुकाबले में हांगकांग, चीन का सामना करेगी। ग्रुप-ए से भारत ने पहले ही सेमीफाइनल में जगह बना ली थी। अब पाकिस्तान (-0.569), थाईलैंड (-2.050) और हांगकांग, चीन (-3.575) क्रमशः दूसरे, तीसरे और चौथे पायदान पर हैं। यानी अगला मैच पाकिस्तान के लिए निर्णायक होगा। इस मुकाबले को लेकर पाकिस्तानी कप्तान ने कहा, हम वहां अच्छा क्रिकेट खेलने की कोशिश करेंगे, और आखिरी मैच में हम जीतने और फाइनल (नॉकआउट) में जाने की कोशिश करेंगे।

इतिहास में पहली बार एक साथ खेलेंगे रोनाल्डो और मेसी? जानें कब होगा मैच

नईदिल्ली, एजेंसी। क्रिस्टियानो रोनाल्डो और लियोनेल मेसी 37 बार एक दूसरे के खिलाफ खेले हैं, लेकिन अब इतिहास में पहली बार एक टीम के लिए खेल सकते हैं. कार्लोस टेवेज इसकी योजना बना रहे हैं, जो दोनों के टीममेट रहे हैं. पुर्तगाल के क्रिस्टियानो रोनाल्डो और अर्जेंटीना के लियोनेल मेसी फुटबॉल जगत के दो बड़े सितारे हैं. लगभग 15 सालों तक, उनकी प्रतिद्वंद्विता ने वर्ल्ड फुटबॉल में एक दौर को परिभाषित किया, खासकर ला लीगा में, जहां रोनाल्डो रियल मैड्रिड और मेसी बार्सिलोना के लिए खेलते थे. लेकिन अब इतिहास में पहली बार दोनों एक साथ, एक टीम के लिए खेल सकते हैं. दोनों के टीममेट रह चूके कार्लोस टेवेज ने एक खास इवेंट की योजना बनाई है. टीवाईसी स्पोर्टस की रिपोर्ट के मुताबिक, टेवेज ने बोका जूनियर्स के प्रेसिडेंट जुआन रोमन रिकेल्मे से 'ला बॉम्बोनेरा' में मैच कराने के बारे में बात की है. रिकेल्मे ने इसके लिए हामी भर दी है, जो टेवेज के साथ खेल चुके हैं. क्रिस्टियानो रोनाल्डो और लियोनेल मेसी में से कौन सबसे महान है, इस पर सालों से बहस होती रही है. नेशनल और क्लब लेवल पर दोनों दिग्गज 37 बार आमने सामने हो चुके हैं, हालांकि कभी दोनों एक टीम के लिए नहीं खेले. दोनों ने मिलकर 13 बैलन डी 'ओर जीते हैं.

दिसंबर में होगा मैच!

बोका जूनियर्स के लिए अपना प्रोफेशनल करियर शुरू करने वाले टेवेज ने 2021 में फुटबॉल से संन्यास ले लिया था. अब 5 साल बाद वह अपने फेयरवेल मैच की तैयारी कर रहे हैं. रिकेल्मे द्वारा हरी झंडी दिए जाने के बाद अधिकारी अब मैच की तारीख को तय करने पर काम कर रहे हैं. संभावना है कि ये मैच दिसंबर में होगा, जिससे बोका जूनियर्स का शेड्यूल प्रभावित न हो.

यूएस ओपन 2026 ▶ कोको गॉफ ने क्रिस्टीना बुच्सा को हराया, चौथे दौर में बनाई जगह

न्यूयॉर्क, एजेंसी। अमेरिका की स्टार टेनिस खिलाड़ी कोको गॉफ ने US Open 2026 में शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए स्पेन की क्रिस्टीना बुच्सा को सीधे सेटों में 6-3, 6-4 से हरा दिया। इस जीत के साथ चौथी वरीयता प्राप्त गॉफ ने लगातार पांचवीं बार US Open के चौथे दौर में जगह बना ली है। उनकी लगातार जीत का सिलसिला अब 9 मैचों तक पहुंच गया है।

बुच्सा ने शुरुआत में गॉफ को दिया झटका – आर्थर ऐश स्टेडियम में खेले गए मुकाबले की शुरुआत गॉफ के लिए आसान नहीं रही। बुच्सा ने आक्रामक शुरुआत करते हुए पहले सेट में 3-1 की बढ़त बना ली थी। हालांकि, गॉफ ने जल्द ही लय हासिल की और अगले छह में से पांच गेम अपने नाम कर लिए। उन्होंने एक शानदार सर्व के साथ पहला सेट 6-3 से अपने नाम किया, जिसका बुच्सा के पास कोई जवाब नहीं था।

दूसरे सेट में भी कांटे की टक्कर – दूसरे सेट में दोनों खिलाड़ियों के बीच कड़ा मुकाबला देखने को मिला। गॉफ ने 4-3 की बढ़त के लिए बुच्सा की सर्विस तोड़ी, लेकिन स्पेनिश खिलाड़ी ने तुरंत वापसी करते हुए स्कोर बराबर कर दिया। इसके बाद गॉफ ने मैच के आखिरी आठ अंक लगातार जीतकर मुकाबला अपने नाम कर लिया और अंतिम-16 में पहुंच गईं।

सर्विस में परेशानी के बावजूद गॉफ का दबदबा

गॉफ का यह प्रदर्शन पूरी तरह बेदाग नहीं रहा। उन्होंने अपनी पहली सर्विस का आधे से भी कम हिस्सा कोर्ट में डाला और छह डबल फॉल्ट किए। इसके बावजूद जब उनकी पहली सर्विस लगी तो वह बेहद प्रभावी रहीं। उन्होंने पहली सर्विस पर 27 में से 20 अंक जीते। गॉफ ने 9 में से 4 ब्रेक पॉइंट कन्वर्ट किए और नेट पर 22 में से 15 अंक अपने नाम किए। उनकी शानदार डिफेंस और कोर्ट पर तेज मूवमेंट एक बार फिर निर्णायक साबित हुई।

दिन के हालात में शुरुआत में हुई परेशानी

गॉफ ने माना कि दिन के समय खेले गए मुकाबले की परिस्थितियों में उन्हें शुरुआत में लय हासिल करने में परेशानी हुई थी। हालांकि, मैच आगे बढ़ने के साथ उन्होंने खुद को परिस्थितियों के अनुसार ढाल लिया। गॉफ ने कहा, 'वह एक मुश्किल खिलाड़ी हैं। वह कभी खेल की गति तेज कर सकती हैं और कभी धीमी। इसलिए मेरे लिए लय हासिल करना मुश्किल था, लेकिन मैं खुश हूं कि जब मैं अपना सर्वश्रेष्ठ टेनिस नहीं खेल रही थी, तब भी मैंने मुकाबला लड़कर जीत हासिल की।'

'लव लॉटरी' में मुख्य भूमिका में दिखाई देंगी हेली दारूवाला

हेली दारूवाला ने टेलीविजन के चर्चित धारावाहिकों से लेकर फिल्मों तक अपने अभिनय के अलग-अलग रंग दिखाए हैं। एकता कपूर के लोकप्रिय धारावाहिक 'नागिन 3' में खलनायिका की भूमिका से पहचान बनाने के बाद वह वर्ष 2025 में 'एक चतुर नार' में टीना गुप्ता की नकारात्मक भूमिका में नजर आईं। अब वह अरविंद पांडे के निर्देशन में बनी 'लव लॉटरी' में अक्षय ओबेरॉय के साथ मुख्य भूमिका में दिखाई देंगी।

आपको टेलीविजन ने पहचान दी। क्या कभी ऐसा लगा कि उस लोकप्रियता ने आपको एक खास छवि (टाइपकास्ट) में बांध दिया? बतौर अभिनेत्री आपके भीतर सबसे बड़ा बदलाव क्या आया है?

मैंने टेलीविजन में अलग-अलग तरह की भूमिकाएँ की हैं। मैंने कोई ऐसा शो नहीं किया जो सालों-साल चले और मैं एक ही किरदार में बंध जाऊं। मैंने कोई टिपिकल 'सास-बहू' ड्रामा भी नहीं किया है। मेरा सफर स्कूल और कॉलेज वाले शोज से शुरू हुआ, फिर कजिन्स पर आधारित शो किया और बाद में 'नागिन' जैसा ग्लैमरस शो किया। इसलिए मेरी ऐसी कोई एक छवि नहीं बनी जिससे मुझे बंधने का अहसास हो।

'एक चतुर नार' के बाद आपने फिर से रहस्य और अपराध (सस्पेंस/क्राइम) से जुड़ी कहानी चुनी, जिसमें मर्डर, मिस्ट्री और कोर्टरूम ड्रामा है। इसे चुनने की क्या वजह रही?

इसके बाद मेरे पास यही फिल्म आई और मुझे इसका अपना किरदार बहुत दिलचस्प लगा। ऐसा रोल मैंने पहले कभी नहीं किया था। एक एक्टर के तौर पर मैं अलग-अलग तरह के किरदार निभाना चाहती हूँ, इसीलिए मैंने इसे चुना।

अक्षय ओबेरॉय जैसे अनुभवी अभिनेता के साथ काम करते हुए अपने किरदार के लिए क्या अतिरिक्त तैयारी की?

अनुभवी तो हम दोनों ही हैं, लेकिन हाँ, मैंने उनका काम देखा है। रीडिंग सेशन के दौरान मैंने उनसे काफी टिप्स और इनपुट्स लिए। जब आप साथ में काम कर रहे होते हैं, तो सामने वाले का नज़रिया समझना बहुत जरूरी होता है। अक्षय के साथ केमिस्ट्री बहुत अच्छी रही, वह बहुत बेहतरीन इंसान हैं और उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला।

इस फिल्म की कहानी में चेहरे के भाव और ठहराव (साइलेंस) भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितना संवाद। बिना बोले भी अभिव्यक्ति देनी पड़ती है। ऐसा कोई दृश्य जिसने चुनौती दी हो?

हाँ, ऐसे कई सीन थे। इस किरदार की भावनाएं और सोच मेरी वास्तविक जिंदगी से बिल्कुल अलग थीं। मैं असल जिंदगी में वैसी इंसान नहीं हूँ। इसलिए खुद को अलग रखकर एक नकारात्मक या जटिल सोच वाले किरदार की भावनाओं को महसूस करना और स्क्रीन पर उतारना चुनौतीपूर्ण था।

सस्पेंस फिल्मों में कलाकारों को दर्शकों से भी काफी कुछ छुपाना पड़ता है, अपने किरदार की परतें नियंत्रित रखनी होती हैं। यह कितना कठिन था?

यह काफी एक्साइटिंग था। एक एक्टर का काम ही यही है कि वह दर्शकों को केवल वही दिखाए जो उस सीन के लिए जरूरी है, न कि अपने मन की बात। मुझे इसके अलग-अलग शेड्स प्ले करने में बहुत मज़ा आया।

आजकल सोशल मीडिया पर फैन फॉलोइंग और लोकप्रियता का दबाव रहता है। क्या इसका असर कलाकारों के वास्तविक अभिनय पर पड़ता है?

यह हर इंसान की व्यक्तिगत सोच है कि वह सोशल मीडिया या फेम को कैसे लेता है। मेरे फैंस और फॉलोअर्स मुझसे इसलिए जुड़े हैं क्योंकि उन्हें मेरा काम (टेलीविजन, ओटीटी या डांस) पसंद आया है। वे हमेशा मेरे अगले प्रोजेक्ट का इंतजार करते हैं। सोशल मीडिया से मुझे दबाव नहीं, बल्कि और अच्छा काम करने की प्रेरणा और उत्साह मिलता है।

फिल्म 'लव लॉटरी' को लेकर क्या उम्मीदें हैं

यह एक पूरी तरह से स्टोरी-ड्रिवन (कहानी पर आधारित) फिल्म है। इसमें काफी ट्विस्ट एंड टर्न्स, सस्पेंस, थ्रिलर के साथ-साथ रोमांस और अच्छे गाने भी हैं। मुझे उम्मीद है कि दर्शक इससे जरूर जुड़ पाएंगे और इसे पसंद करेंगे।

प्रेशर को पॉजिटिव रूप से देखता हूं

दिग्गज निर्देशक राजकुमार हिरानी इस साल अपनी पहली वेब सीरीज 'प्रीतम एंड पेड्रो' लेकर आए। इसकी सफलता, ओटीटी के बदलते मिजाज आदि पर उन्होंने खास बातचीत की...

क्या सोचा था कि पहला ओटीटी प्रोजेक्ट इतना सफल रहेगा?

ओटीटी को लेकर सालों से माना जाता रहा है कि यहां गंभीर और क्राइम जैसी कहानियां ज्यादा चलती हैं। इसलिए जब हम इसे लिख रहे थे तो शुरुआत में लगा कि फिल्म की तरह जल्दी जल्दी कहानी कह रहे हैं। मन में इसे लेकर शंका थी, लेकिन जब सीरीज को अच्छे नंबर मिलने लगे तो तसल्ली हुई कि हमारा रास्ता सही है। हमारा मानना है कि अगर कहानी दिल से लिखी जाए तो वह दर्शकों को जरूर पसंद आती है।

सीरीज बनने के लिए आपने इसी विषय को क्यों चुना?

जब कोई कहानी नई लगती है तो उसे कहने की इच्छा होती है। साइबर क्राइम पर कई फिल्में देखी थीं, लेकिन उनमें सिर्फ ऊपरी बातें दिखाई गई थीं। पहली बार पता चला कि किसी क्राइम को तकनीकी तरीके से कैसे सुलझाया जाता है। जैसे सीरीज में एटीएम चोरी के मामले को साइबर तकनीक की मदद से ट्रैक करने की पूरी प्रक्रिया दिखाई गई है। यही बात मुझे रोचक लगी और लगा कि फ्रॉड पकड़ने की ऐसी कहानी ओटीटी के लिए ज्यादा सही है, सिनेमा के लिए नहीं।

'प्रीतम एंड पेड्रो' को कॉमेडी के साथ जोड़ने का विचार कैसे आया?

कहानी कहने के कई तरीके होते हैं और उनमें कॉमेडी सबसे दिलचस्प तरीका है। साइबर क्राइम जैसे गंभीर विषय पर पहले से काफी कंटेंट बन रहा था, इसलिए मैंने इसे थोड़ा हल्का और मजेदार रखना चाहा। इसमें एक तरफ साइबर क्राइम की कहानी है, तो दूसरी तरफ दो दोस्तों की भी, जिनमें एक कंप्यूटर नहीं जानता और दूसरा क्राइम ब्रांच। मुझे वैसे भी हंसाने वाली कहानियां ज्यादा पसंद हैं।

क्या आप हमेशा एक हिट फिल्म देने का प्रेशर महसूस करते हैं?

जब भी कोई फिल्म बनती है, हम चाहते तो यही हैं कि ज्यादा से ज्यादा लोग उसे पसंद करें। लिखने के दौरान वो विचार तो बना ही रहता है और इसी वजह से स्क्रिप्ट के साथ अधिक से अधिक समय बिताते हैं और यह कोई निगेटिव प्रेशर नहीं है, इसको मैं पॉजिटिव रूप से देखता हूं और आजकल हर तरह की चीज लोग देख चुके हैं तो बतौर फिल्ममेकर हमारी कोशिश दर्शकों को कुछ अलग तरह का कंटेंट देने की रहती है।

'मिर्जापुर' की गोलू और श्वेता त्रिपाठी में क्या है खास समानता? एक्ट्रेस ने खुद किया खुलासा

एक्ट्रेस श्वेता त्रिपाठी इन दिनों अपनी चर्चित फिल्म 'मिर्जापुर : द फिल्म' को लेकर सुर्खियों में हैं। फिल्म में एक बार फिर वह गोलू गुप्ता के अपने पसंदीदा किरदार में नजर आने वाली हैं। गोलू का किरदार श्वेता के करियर के सबसे चर्चित किरदारों में से एक रहा है। अब एक्ट्रेस ने बताया है कि गोलू और उनमें सबसे बड़ी समानता किताबों के प्रति प्यार है, इसलिए जब उन्हें गोलू के किरदार में किताबों से लगाव को समझाने का सीन किया, तो इसके लिए उन्हें अलग से तैयारी या रिसर्च करने की जरूरत नहीं पड़ी। श्वेता ने कहा, ''हर कलाकार की इच्छा होती है कि उसे कभी ऐसा किरदार मिले, जिसमें उसके व्यक्तित्व का कोई हिस्सा पहले से मौजूद हो। मेरे लिए गोलू कुछ ऐसा ही किरदार रही है। किताबों के प्रति गोलू का लगाव मुझे बहुत अपना लगा, क्योंकि मैं खुद भी कई सालों से किताबें पढ़ती आ रही हूं। मैं अक्सर किताबों की दुकान पर यह सोचकर जाती हूं कि मैं सिर्फ किताबें देखूंगी, लेकिन वहां से कम से कम तीन किताबें लेकर ही निकलती हूं।''

श्वेता ने कहा, ''पढ़ने की आदत ने मेरे सोचने और दुनिया को देखने का तरीका भी बदल दिया है। किताबों ने मुझे अलग-अलग तरह के लोगों को समझने में मदद की। एक कलाकार के लिए यह बहुत जरूरी होता है, क्योंकि किसी किरदार को निभाने से पहले यह समझना पड़ता है कि वह व्यक्ति किसी स्थिति में वैसा व्यवहार क्यों कर रहा है। किताबें इंसान को अपनी जिंदगी से बाहर निकले बिना कई अलग-अलग लोगों और उनकी जिंदगियों को समझने का मौका देती हैं।'' एक्ट्रेस ने कहा, ''किताबों ने मुझे लोगों के बारे में तुरंत राय बनाने से भी बचाया है। पढ़ने की वजह से मैं दूसरों को ज्यादा समझ पाती हूं और मेरे अंदर दूसरों की भावनाओं को महसूस करने की क्षमता बढ़ी है। इसके साथ ही किताबों ने मेरे अंदर लगातार कुछ नया जानने और सीखने की इच्छा भी बनाए रखी है। यही वजह है कि मुझे गोलू के किरदार में भी अपनी सोच की झलक दिखाई देती है।''

श्वेता ने कहा, ''गोलू और मेरे बीच सिर्फ किताबें ही एक समान चीज नहीं हैं। हम दोनों में सवाल पूछने और हर बात को बिना सोचे-समझे स्वीकार न करने की आदत भी है। हम दोनों कुछ नया सीखने को लेकर उत्सुक रहती हैं, लेकिन हमारे स्वभाव में एक बड़ा अंतर है। गोलू काफी शांत और कम बोलने वाली है, जबकि मैं खुद बातचीत करना और अपनी भावनाओं को खुलकर जाहिर करना पसंद करती हूं।'' बता दें कि 'मिर्जापुर : द फिल्म' का निर्देशन गुरमीत सिंह ने किया है। फिल्म को अमेजन एमजीएम स्टूडियोज ने एक्सेल एंटरटेनमेंट के साथ मिलकर प्रस्तुत किया है। रितेश सिधवानी और फरहान अख्तर इसके निर्माता हैं, जबकि कासिम जगमगिया और विशाल रामचंदानी फिल्म के सह-निर्माता हैं।

मालामाल वीकली 2 में नजर आएंगी ईशा देओल

ईशा देओल एक बार फिर उस जॉनर में वापसी कर रही हैं, जिसे वह हमेशा से पसंद करती रही हैं। एक्ट्रेस ने फिल्म पर बात करते हुए एक्साइटमेंट जाहिर की है।

ईशा देओल अब 'मालामाल वीकली 2' में नजर आएंगी। यह एक कॉमिक कैपर यानी मजेदार और मनोरंजन से भरपूर फिल्म है। ईशा के लिए यह फिल्म बिल्कुल सही समय पर आई है। इससे पहले वह दो बिल्कुल अलग तरह की फिल्मों पर काम कर चुकी हैं- हॉरर-कॉमेडी 'घूंघट' और तेलुगु फिल्म 'SYG'। ईशा ने कहा, 'मुझे इस समय बिल्कुल यही चाहिए था- कुछ मजेदार, हल्का-फुल्का और हंसी से भरपूर। अभी मैंने दो बिल्कुल अलग तरह की फिल्में पूरी की हैं- हॉरर-कॉमेडी 'घूंघट' और तेलुगु फिल्म 'स्ब्त्न'। इसके बाद मैं एक पूरी तरह की कॉमिक कैपर फिल्म करना चाहती थी और 'मालामाल वीकली 2' बिल्कुल सही समय पर मेरे पास आई।'

ईशा देओल इससे पहले 'नो एंट्री', 'शादी नं. 1' और 'वन टू थ्री' जैसी कॉमेडी फिल्मों में काम कर चुकी हैं। एक्ट्रेस का कहना है कि कॉमेडी हमेशा से उनके दिल के करीब रही है। ईशा ने बताया कि फिल्म की स्क्रिप्ट ने उन्हें इस प्रोजेक्ट का हिस्सा बनने के लिए सबसे ज्यादा आकर्षित किया। उन्होंने कहा, ''नो एंट्री', 'शादी नं. 1' और 'वन टू थ्री' जैसी फिल्में करने के बाद कॉमेडी एक ऐसा स्पेस है, जिसे मैंने हमेशा पसंद किया है और जिसमें मैं वापस आना चाहती थी। इसकी स्क्रिप्ट बहुत मजेदार है और मुझे सच में लगता है कि हर कोई इसे पसंद करेगा। मैं बहुत खुश हूं कि मैं ऐसी फिल्म का हिस्सा हूं, जो पूरी तरह मस्ती, हंसी और मनोरंजन से भरपूर है।'

रितेश से एल्विश तक ये सितारे आएंगे नजर

'मालामाल वीकली 2' की कास्ट को लेकर अब तक सामने आई रिपोर्ट्स में रितेश देशमुख, परेश रावल, राजपाल यादव, एल्विश यादव, रवीना टंडन, परिणीति चोपड़ा, शिल्पा शिरोडकर, फरदीन खान के नाम शामिल हैं। फिल्म का निर्देशन 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' फेम अमित जोशी करेंगे और इसकी शूटिंग नवंबर से शुरू हो सकती है।

श्वेता बसु की एंट्री से बढ़ेगा 'असुर 3' का सस्पेंस

वेब सीरीज 'असुर' के तीसरे सीजन को लेकर बड़ा अपडेट सामने आया है। अरशद वारसी और बरुण सोबती की इस साइकोलॉजिकल क्राइम थ्रिलर सीरीज की शूटिंग सितंबर 2026 से शुरू होने की तैयारी है। इसकी स्क्रिप्ट भी लॉक हो चुकी है। तीसरे सीजन में श्वेता के किरदार की डिटेल फिलहाल गोपनीय रखी गई है। माना जा रहा है कि उनकी एंट्री कहानी में नई परत जोड़ेगी। वह सीरीज में नया सस्पेंस जोड़ेंगी। वहीं, कास्टिंग अभी जारी है और आने वाले दिनों में कुछ और नाम सामने आएंगे। इस बार 'असुर 3' में कैमरे के पीछे भी बदलाव होगा। सीरीज के क्रिएटर और राइटर गौरव शुक्ला पहली बार निर्देशन की कमान संभालेंगे।

कार्थी की फिल्म में दिखेंगी नयनतारा

अभिनेता कार्थी ने हाल ही में निर्देशक मोहन राजा के साथ अपनी नई फिल्म का ऐलान किया है। अब रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि फिल्म में उनके साथ नयनतारा या तृषा कृष्णन मुख्य भूमिका निभा सकती हैं। हालांकि, मेकर्स ने अभी तक इस कास्टिंग की पुष्टि नहीं की है। रिपोर्ट्स के मुताबिक... 'फिल्म के लिए नयनतारा पहली पसंद हैं। अगर वह इस प्रोजेक्ट का हिस्सा बनती हैं तो 'काश्मोरा' के बाद यह उनकी और कार्थी की दूसरी फिल्म होगी। नयनतारा इससे पहले मोहन राजा के साथ 'थानी ओरुवन', 'वेलैक्कारण' और 'गॉडफादर' में भी काम कर चुकी हैं। अगर नयनतारा अपनी व्यस्तता के कारण फिल्म नहीं कर पाती हैं, तो मेकर्स तृषा कृष्णन से संपर्क कर सकते हैं।

पीटीसी कॉलेज वापी ने शिक्षक दिवस पर दमण के शिक्षक वीरेंद्र पटेल को किया सम्मानित

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण, 6 सितंबर। शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र में बेहतरीन काम करने वाले शिक्षकों को सम्मानित करने के लिए सर्वोदय मंडल वापी द्वारा संचालित खंडूभाई हरिभाई देसाई पुरुष अध्यापन मंदिर में एक बड़ा सम्मान समारोह आयोजित किया गया था। यह कार्यक्रम संस्था के प्रिंसिपल डॉ. किरणभाई पटेल द्वारा आयोजित और संस्था के अध्यापकों द्वारा संचालित किया गया। इस कार्यक्रम में संस्था में पीटीसी ट्रेनिंग ले चुके भूतपूर्व प्रशिक्षणार्थियों वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में अहम योगदान दे रहे 11 शिक्षकों को सम्मानित किया गया और पूर्व रिटायर्ड अध्यापकों को भी सम्मानित किया गया। समारोह में संघ प्रदेश श्रीडी और गुजरात के अलग-अलग जिलों से 11 सबसे बेस्ट टीचर्स को चुनकर सम्मानित किया गया। इसके साथ ही उनके शैक्षणिक और सोशल फील्ड में हासिल उपलब्धियों का ओवरव्यू पेश किया गया। पीएम श्री रिंगणवाड़ा स्कूल दमण के हेड मास्टर वीरेन्द्र पटेल की खास उपलब्धियों, स्कूल और शिक्षा के प्रति उनके समर्पण, स्वच्छता अभियान में उनकी उपलब्धियों के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में उनके लगातार प्रयास से पीएम स्कूल की गतिविधियों में स्कूल को यूटी, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सिद्धि प्राप्त करने के उनके काम की सराहना की गई। इसके साथ ही गुजरात के अलग-अलग जिलों में काम करने वाले 10 सबसे अच्छे टीचर, जिनमें 5 बच्चों के स्कूल को 168 बच्चों तक ले जाने वाले शिक्षक नीलेशभाई-धरमपुर, स्पर्धात्मक परीक्षाओं में सफल होने वाले शिक्षक सुनीलकुमार गावित-वडोदरा, प्रौढ शिक्षण एवं मास्टर ट्रेनर के तौर पर काम करने वाले शिक्षक मणिलाल वसावा-भरूच, स्थानिक बोली में लिटरेचर और फलिया शिक्षण देने वाले शिक्षक पंकजभाई पटेल-वांसदा, संगीत और रिसर्च से शिक्षा को नई दिशा देने वाले शिक्षक कल्पेशकुमार-धरमपुर, दुर्गम इलाकों में शिक्षा की ज्योत जलाने वाले शिक्षक विजयभाई-कपरड़ा, आईसीटी और नई शिक्षा पद्धति से क्लासरूम को जीवंत रखने वाले शिक्षक प्रशांत सिंह-वापी, उच्च शिक्षा में योगदान देनेवाले शिक्षक डॉ. जितेंद्रसिंह-नवसारी, विद्यार्थी जीवन की सिद्धि को शिक्षा सेवा में बदलने वाले शिक्षक संजय भोया-कपराड़ा, शिक्षा के नवाचार में योगदान देने वाले शिक्षक धर्मेशभाई-डांग इत्यादि शामिल हैं। बच्चों की सर्वांगी विकास के लिए अपनी जिंदगी समर्पित करने वाले सभी शिक्षकों को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया। इस सम्मान समारोह में वापी से लेकर दमण, धरमपुर, कपराडा, नवसारी, वडोदरा, कच्छ और डांग तक शिक्षा की सेवा करने वाले इन टीचरों ने दिखा दिया कि एक अच्छा टीचर सिर्फ क्लासरूम तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि समाज को शिक्षित बनाने का काम भी करता है। एक अच्छा शिक्षक सिर्फ विद्यार्थियों को ज्ञान ही नहीं देता, बल्कि एक अच्छा नागरिक भी बनाता है। शिक्षक दिवस पर हुए इस सम्मान समारोह में सम्मानित शिक्षकों की कामयाबियों को याद करके शिक्षक की अगली पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा देने वाला मैसेज दिया गया। शिक्षा में गुणवत्ता, नवाचार, रिसर्च, परिवर्तनशीलता और जरूरतमंद बच्चों के प्रति जिम्मेदारी इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर यह सम्मान समारोह शिक्षा जगत के लिए प्रेरणास्रोत रहा।

मराठा सेवा संघ दादरा नगर हवेली ने आयोजित किया शिक्षक एवं विद्यार्थी सम्मान समारोह

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, सिलवासा, 6 सितंबर। पिछले कई वर्षों से मराठा सेवा संघ कक्षा 10वीं एवं 12वीं के विद्यार्थियों के सम्मान समारोह का आयोजन करता आ रहा है। इस वर्ष इस समारोह का आयोजन गार्डन सिटी कम्युनिटी हॉल में किया गया था। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में डॉ. अनुकूल निकम, डॉ. रश्मी निकम तथा बलवंत पाटील उपस्थित रहे। सेवानिवृत्त अधिकारी अनंतराव निकम एवं उद्योगपति भाऊसाहब डेरे के मार्गदर्शन में कार्यरत मराठा सेवा संघ ने लगभग 50 मेधावी विद्यार्थियों के सम्मान समारोह का आयोजन किया। शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में 10 उत्कृष्ट शिक्षकों का भी सम्मान किया गया। सिलवासा नगरपालिका के अध्यक्ष सोमनाथ पाटील ने संबोधन में विद्यार्थियों से अपने माता-पिता के परिश्रम का सम्मान करने और उसे सार्थक बनाने का आह्वान किया। वहीं डॉ. अनुकूल निकम ने बदलते समय में विद्यार्थियों से शिक्षा पर विशेष ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया।

अपने मार्गदर्शनात्मक भाषण में बलवंत पाटील ने विद्यार्थियों को समय के अनुरूप अपने ज्ञान के दायरे को विस्तृत करने की प्रेरणा दी। इस समारोह में लगभग सभी क्षेत्रों के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। समारोह को सफल बनाने के लिए कार्याध्यक्ष बाबू डेरे एवं संदीप पाटील के कुशल मार्गदर्शन में योगेश सोनवणे, राजन दादा, चंद्रशेखर कणसे, प्रशांत ठाकरे, भरत सोनवणे, दिनेश देसले, राजेंद्र वाघ, स्वप्निल शेवाळे तथा शिक्षकों एवं समाजबंधुओं ने अथक परिश्रम किया।

दीव के घोघला में खारवा समाज ने लक्ष्मीनारायण और भगवान श्री राम की निकाली शोभायात्रा

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दीव, 6 सितंबर। दीव के घोघला में खारवा समाज द्वारा लक्ष्मीनारायण और भगवान श्री राम की शोभायात्रा निकाली गयी थी। इस अवसर पर लक्ष्मीनारायण और भगवान श्री राम को आमने-सामने दर्शन कराया गया। इसके बाद भक्तों ने भगवान के दर्शन का लाभ लिया। इस अवसर पर दीव नगरपालिका की उपप्रमुख करुणाबेन एवं खारवा समाज के प्रमुख रविभाई ने भगवान के दर्शन किये। इसके बाद शोभायात्रा निकाली गयी, जो पूरे गांव में घूमी। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने दर्शन का लाभ लिया।

दमण मलयाली समाज ने ओणम पर्व के जश्न का किया आगाज

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण, 6 सितंबर। दमण मलयाली समाजम में ओणम का जश्न आज आधिकारिक तौर पर शुरू हुआ। समाजम के सदस्यों और उनके परिवारों की मौजूदगी रही। दमण मलयाली समाज के प्रेसिडेंट राजू जैकब, सेक्रेटरी गिरीश मेनन, वाइस प्रेसिडेंट दिनेश मेनन, ट्रेजरर राजेश पी. वी., वनिता वेदी की प्रेसिडेंट आशा नायर और युवाजन वेदी की प्रेसिडेंट अर्चना नायर ने पारंपरिक दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

दीव के घोघला में मटकी चौक ग्रुप ने धूमधाम से मनाई जन्माष्टमी

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दीव, 6 सितंबर। दीव के घोघला मटकी चौक पर मटकी चौक ग्रुप ने जन्माष्टमी का त्यौहार धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया। जन्माष्टमी के मौके पर हुए प्रोग्राम में बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों और भक्तों ने हिस्सा लिया। प्रोग्राम की शुरुआत भगवान कृष्ण की आरती से हुई। उसके बाद कई तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए। जन्माष्टमी के मौके पर आतिशबाजी, कई तरह के कल्चरल प्रोग्राम, इनाम बांटने और मटकी फोड़ने का प्रोग्राम रखा गया, जिसे बड़ी संख्या में लोगों ने देखा। इस मौके पर सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति देने वालें सभी प्रतिभागियों को इनाम देकर प्रोत्साहित किया गया। श्री कृष्ण लीला पर यह सभी सांस्कृतिक कार्यक्रम लोगों के आकर्षण का केंद्र बने। इसके साथ ही पारंपरिक दही हांडी भी आयोजित हुई, जिसमें युवाओं और बच्चों में काफी उत्साह से हिस्सा लिया और पिरामिड बनाकर युवाओं ने मटकी फोड़ी और भक्तों को प्रसाद बांटा गया। प्रोग्राम के दौरान मौजूद मेहमानों ने भाषण दिए और बच्चों को अलग-अलग कल्चरल एक्टिविटी में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित किया। इस मौके पर वैदिक चैरिटेबल ट्रस्ट के चेयरमैन किरीट वाजा, दीव नगरपालिका के पूर्व प्रमुख और काउंसिलर हेमलता रामा, लक्ष्य लिटिल जूनियर्स इंग्लिश मीडियम स्कूल के ट्रस्टी मिलन बामणिया, गौरक्षा समिति के फाउंडर प्रेसिडेंट और वैदिक चैरिटेबल ट्रस्ट के मेंबर प्रियांक लालजी और जैवभाई मौजूद रहे। जन्माष्टमी के जश्न के दौरान पूरा मटकी चौक श्री कृष्णमय हो गया और लोगों ने भक्तिमय माहौल में उत्साह से त्यौहार मनाया।

દુઃખદ અવસાન / બેસણું

સ્વ.સવિતાબેન કેશવભાઈ પટેલ

સ્વ. તા.05/09/2026

દિલગીરી સાથે જણાવવાનું કે અમારી માતૃશ્રી સ્વર્ગીય સવિતાબેન કેશવભાઈ પટેલ તા.05/09/2026ના રોજ દેવલોક પામ્યા છે. પરમાત્મા આપના આત્માને ચીરશાંતિ આપે એ જ પ્રાર્થના.

સદગતનું બેસણું તા.07/09/2026 સોમવાર, સવારે 9 થી 12 વાગ્યા સુધી અમારા નિવાસસ્થાને રાખવામાં આવેલ છે.

અગિયારમું: તા.15/09/2026, મંગળવારના રોજ રાખવામાં આવેલ છે.

લિ.

રાજુ કેશવભાઈ પટેલ (પુત્ર) | મહેશ કેશવભાઈ પટેલ (પુત્ર)
ઉપેન્દ્ર કેશવભાઈ પટેલ (પુત્ર)
તથા પટેલ પરિવાર

નિવાસસ્થાન: દલવાડા, એરપોર્ટની બાજુમાં, નાની દમણ. (મો.09824131915)

स्वामी: मारुतिनंदन पब्लिक, संपादक, प्रकाशक व मुद्रक विजय जगदीशचंद्र भट्ट द्वारा गाला नं. 7, तिरुपति इंडस्ट्रीयल एस्टेट, सोमनाथ मंदिर रोड, दाभेल, नानी दमण - 396210 से प्रकाशित तथा असली आजादी प्रेस गाला नं. 7, तिरुपति इंडस्ट्रीयल एस्टेट, सोमनाथ मंदिर रोड, दाभेल नानी दमण - 396210 से मुद्रित।
(समाचारों के चयन के लिए संपूर्ण जिम्मेदारी पीआरबी एक्ट के अंतर्गत संपादक की होगी। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दमण न्यायालय के अधीन होगा।)